सतना
29 नवंबर 2024 शुक्रवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

वक्फ बोर्ड बिल से छिन जाएंगे मुस्लिमों के अधिकार

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने विधानसभा में वक्फ संशोधन बिल को लेकर केंद्र सरकार पर हमला बोला और यह तक कहा कि इस बिल के चलते मुस्लिमों के अधिकार छिन जाएंगे। सीएम ने आरोप लगाया कि इसके जरिए एक खास वर्ग को टारगेट किया जा रहा है। दूसरी ओर वक्फ बोर्ड को लेकर बनी संयुक्त संसदीय समिति का कार्यकाल बढ़ा दिया गया है। इसके चलते यह तय हो गया है कि अब शीतकालीन सत्र में तो वक्फ बोर्ड का बिल सरकार नहीं ही लाएगी। दरअसल, आज ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल की विधानसभा को संबोधित कर रही थीं और इस दौरान ही उन्होंने वक्फ संशोधन बिल का जिक्र किया।

एनआईए को आतंकवाद के खिलाफ बड़ी कामयाबी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को आतंकवाद के खिलाफ बड़ी कामयाबी मिली है। एनआईए लश्कर-ए-तैयबा के बड़े कमांडर सलमान खान को रवांडा से भारत लाई है। खान पर बेंगलुरु की जेल में देश के खिलाफ साजिश रचने और लोगों को कट्टरपंथी बनाकर आतंक की फौज तैयार करने का आरोप है। एनआईए अधिकारी ने कहा कि सलमान को 27 नवंबर को हिरासत में लिया गया और आज सुबह भारत लाया गया। सलमान 2020 के बाद से एनआईए के रडार पर था और एजेंसी उसके प्रत्यर्पण की कोशिश में थी। एनआईए ने इस काम में रवांडा जांच ब्यूरो (आरआईबी), इंटरपोल और राष्ट्रीय केंद्रीय ब्यूरो (एनसीबी) की सहायता ली। एनआईए के अनुरोध पर सीबीआई ने सलमान खान के खिलाफ एक रेड नोटिस जारी करवाया था।

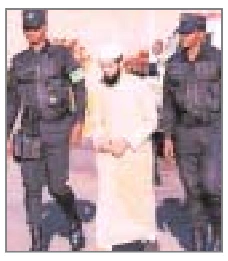

अडाणी पर लगे आरोपों को नॉर्वे-राजनयिक ने अमेरिकी अतिक्रमण बताया

मुंबई (एजेंसी)। नॉर्वे के राजनयिक और यूएन एनवायरमेंट प्रोग्राम के फॉर्मल एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर एरिक सोलहेम ने अमेरिकी सरकार की हाल ही में आई उस रिपोर्ट की आलोचना की है, जिसमें गौतम अडाणी समेत 8 लोगों पर अरबों रुपए की रिश्वत देने और धोखाधड़ी का आरोप लगाया है। उन्होंने इसे अमेरिकी अतिक्रमण कहते हुए रिपोर्ट की ग्लोबल मीडिया कवरेज पर बात करते हुए पूछा - अमेरिकी अतिक्रमण कब रुकेगा सोलहेम ने कहा कि आरोपों में वास्तविक रिश्वत पेमेंट या अडाणी ग्रुप के लीडर्स की संलिप्तता के सबूत नहीं हैं। न ही इस बात का कोई सबूत है कि अडाणी के अधिकारियों ने भारतीय सरकारी अधिकारियों को रिश्वत दी थी। आरोप केवल इस दावे पर आधारित है कि रिश्वत का वादा किया गया था या इस पर चर्चा की गई थी। इस अमेरिकी अतिक्रमण के लोगों के जीवन पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यह अडाणी ग्रुप को लेकर अमरीकी चाल है।

हरियाणा के बॉक्सर की दिल्ली में चुनाव लड़ने की तैयारी

● कांग्रेस में हार के बाद भाजपा में शामिल हो चुके

हिसार (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 से पहले कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए हरियाणा के बॉक्सर विजेंदर सिंह दिल्ली में विधानसभा चुनाव लड़ सकते हैं। इसकी चर्चा तब शुरू हुई जब विजेंदर सिंह ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर बीजेपी के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े के साथ एक फोटो शेयर की। इस फोटो में विजेंदर पंच दिखाते नजर आ रहे हैं। बता दें कि विजेंदर सिंह इससे पहले दक्षिण दिल्ली लोकसभा से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं। हालांकि, उस चुनाव में उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा था। अब वह बीजेपी से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। इन चर्चाओं पर विजेंदर सिंह के भाई मनोज बेनीवाल का कहना है कि अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। पार्टी जो जिम्मेदारी विजेंदर को देगी, वह अच्छे से निभाएगा। बॉक्सर विजेंदर सिंह ने 2019 में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी।

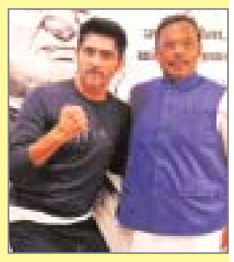

मणिपुर में शांति बहाली में सेना का है बड़ा रोल

● आर्मी चीफ बोले-सेना में एक साथ काम करते हैं कुकी और मैतेई

● 13 दिन बाद जिरीबाम में अब खुलेंगे स्कूल, सर्च ऑपरेशन जारी

पुणे (एजेंसी)। मणिपुर हिंसा के बीच आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा है कि सेना कुकी और मैतेई समाज के लोगों को एकजुट करने का काम कर रही है। उनका कहना है कि भारतीय सेना एक जाति विहीन आर्मी है।

यह आपसी तालमेल बढ़ाती है और मतभेद खत्म करती है। यहां सभी संस्कृति के लोग एक साथ काम करते हैं। जनरल द्विवेदी ने पुणे की सावित्रीबाई फुले यूनिवर्सिटी में एक प्रोग्राम के दौरान मणिपुर में शांति बहाली के लिए आर्मी के पूर्व सिपाहियों के प्रयासों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि रिटायर्ड जवान कुकी-मैतेई के बीच शांति स्थापित करने के लिए काम कर रहे हैं। दरअसल, मणिपुर में कई बार शांति बहाली के लिए कुकी और मैतेई समाज के एक्स-सर्विसमेन की रैलियां हुई हैं। हिंसा के 13 बाद कल से इंफाल वैली में 16 दिन से बंद स्कूल-कॉलेज फिर से खुल जाएंगे। दरअसल, जिरीबाम में 16 नवंबर को 3 बच्चों और 3 महिलाओं का शव मिलने के बाद इंफाल वैली के जिलों के स्कूल बंद कर दिए गए थे। इंफाल में सुरक्षाबलों ने 94 चेकपॉइंट बनाए मणिपुर में सुरक्षाबलों ने पहाड़ी और घाटी जिलों के संवेदनशील इलाकों में सर्च ऑपरेशन चलाए।

हेमंत सोरेन चौथी बार बने झारखंड के सीएम

अकेले शपथ ली, मंच पर राहुल, केजरीवाल, ममता समेत 10 पार्टियों के नेता रहे मौजूद

रांची (एजेंसी)। जेएमएम लीडर हेमंत सोरेन चौथी बार झारखंड के सीएम बन गए। उन्हें गुरुवार को रांची के मोरहाबादी मैदान में गवर्नर संतोष गंगवार ने शपथ दिलाई। मंत्रिमंडल का विस्तार बाद में किया जाएगा। समारोह में इंडिया की 10 पार्टियों के 18 बड़े नेता शामिल हुए। इनमें राहुल गांधी, प. बंगाल की सीएम ममता बनर्जी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव और आरजेडी के तेजस्वी यादव मौजूद रहे। दोपहर 3 बजे हेमंत सोरेन अपने पिता शिबू सोरेन को हाथ पकड़कर समारोह स्थल ले गए। शपथ से पहले हेमंत ने कहा, आज का दिन ऐतिहासिक होगा। हमारी एकता ही हमारा सबसे बड़ा हथियार है। हमें न विभाजित किया जा सकता है, न ही शांत किया जा सकता है। हम झारखंडी हैं और झारखंडी झुकते नहीं हैं। शपथ ग्रहण समारोह के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सिदो- कान्हू उद्यान में अमर वीर शहीद सिदो- कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके साथ उनकी पत्नी कल्पना सोरेन भी थीं। वहीं, अर्जुन महतो के शहीद होने पर उनके भाई बलराम महतो को नियुक्ति पत्र दिया।

संसद में प्रियंका का पहला दिन

हाथ में संविधान की कॉपी लेकर ली शपथ

राहुल ने गेट पर रोककर कहा-लेट मी टेक योर फोटो

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल के वायनाड से चुनाव जीतकर प्रियंका गांधी गुरुवार को पहली बार लोकसभा पहुंचीं। उन्हें सांसद पद की शपथ दिलाई गई। प्रियंका ने हिंदी में शपथ ली। इस दौरान उन्होंने राहुल की तरह हाथ में संविधान की कॉपी पकड़ी हुई थी। प्रियंका जब संसद पहुंचीं, तो कांग्रेस नेताओं ने बाहर ही उनका स्वागत किया। सदन में एंट्री से पहले भाई राहुल ने उन्हें रोका और कहा- स्टॉप, स्टॉप, स्टॉप... लेट मी ऑलसो टेक योर फोटो... (रुको, रुको, रुको... मुझे भी तुम्हारी फोटो लेने दो...) संसद में प्रियंका ने संविधान की कॉपी हाथ में लेकर हिंदी में शपथ ली। प्रियंका के सांसद बनने पर मां सोनिया गांधी ने कहा, वी आर ऑल वेरी हैप्पी एंड प्राउड... (हमें गर्व है और हम सब बेहद खुश हैं...)। प्रियंका संसद में केरल की प्रसिद्ध 'कसावु' साड़ी पहनकर पहुंची थीं। संसद में राहुल और सोनिया के साथ प्रियंका के पति रॉबर्ट वाड्रा भी मौजूद थे। शपथ के बाद प्रियंका ने कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे का आशीर्वाद लिया। संसद में पहली बार गांधी परिवार के 3 सदस्य मौजूद हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल यूपी के रायबरेली से और प्रियंका केरल के वायनाड से सांसद हैं। जबकि सोनिया राजस्थान से राज्यसभा सदस्य हैं। दरअसल प्रियंका गांधी की शपथ के लिए लोकसभा में जा रही थीं, तभी उनके भाई और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी तेज कदमों से कुछ आगे गए और उन्होंने अपनी बहन सहित सभी सांसदों को अचानक रुकने के लिए कहा। राहुल ने सभी सांसदों को रुकने का इशारा करते हुए कहा, स्टॉप, स्टॉप, स्टॉप, स्टॉपज स्टॉप इसके बाद राहुल गांधी ने अपनी जेब से मोबाइल फोन निकाला और प्रियंका गांधी के साथ सभी सांसदों की तस्वीर लेने लगे। इस दौरान कुछ ऐसा संवाद हुआ कि सभी सांसद राहुल गांधी की तरह इशारा कर हंसने लगे और नेता प्रतिपक्ष के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई। राहुल गांधी ने सांसदों के ग्रुप के साथ अपनी बहन की दो-तीन तस्वीरें लीं और फिर मोबाइल पर सभी तस्वीरें चेक करने के बाद कहा, ओके, कम। प्रियंका गांधी ने लोकसभा की सदस्यता की शपथ हिंदी भाषा में ली। इस दौरान उन्होंने संविधान की एक प्रति अपने हाथ में ले रखी थी। वह जब शपथ लेने के लिए खड़ी हुई तो कांग्रेस सांसदों ने 'जोड़ो-जोड़ो, भारत जोड़ो' के नारे लगाए। महाराष्ट्र के नांदेड़ से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए सांसद रवींद्र बसंतराव चव्हाण ने भी सदन की सदस्यता की शपथ ली। उन्होंने मराठी भाषा में शपथ ली। शपथ ग्रहण करने के बाद प्रियंका गांधी ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का हाथ जोड़कर अभिवादन किया। राहुल गांधी ने प्रियंका को बधाई देते हुए गले लगाया।

बांग्लादेश के कोर्ट का इस्कॉन मंदिर पर बैन लगाने से इनकार

चिन्मय दास की गिरफ्तारी से बढ़ा है विवाद, लग रहे हैं हिंसा करने के आरोप

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में हाईकोर्ट ने इस्कॉन पर बैन लगाने से इनकार कर दिया है। अदालत ने गुरुवार को इस्कॉन की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने पर स्वतः संज्ञान लेते हुए आदेश पारित करने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट के वकील मोहम्मद मोइनुउद्दीन ने बुधवार को इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) के बारे में अलग-अलग समाचार पत्रों की रिपोर्ट अदालत में पेश की थी। इन रिपोर्ट्स में कथित तौर पर इस्कॉन से जुड़े लोगों पर हिंसा भड़काने और चिटगांव में वकील सैफुल इस्लाम की हत्या में शामिल होने के आरोप लगे थे। इस आधार पर मोइनुद्दीन ने अदालत से इस्कॉन पर बैन का स्वतः संज्ञान (स्वैच्छिक) आदेश देने का अनुरोध किया था। बांग्लादेश के अखबार द डेली स्टार के मुताबिक, याचिका में आरोप लगाया गया था कि इस्कॉन सांप्रदायिक हिंसा भड़काने, पारंपरिक हिंदू समुदायों पर अपनी मान्यताओं को थोपने और पिछड़ी हिंदू जातियों के सदस्यों को जबरन भर्ती करने के इरादे से धार्मिक आयोजनों को बढ़ावा दे रहा है। गुरुवार को अदालत में इस पर सुनवाई हुई। इस दौरान जस्टिस फराह और देबाशीष की पीठ को बताया कि सरकार इस संबंध में सभी जरूरी कदम उठा रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने यासीन मलिक को भेजा नोटिस

केस जम्मू से नई दिल्ली ट्रांसफर करने से जुड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को जम्मू-कश्मीर के अलगाववादी नेता यासीन मलिक से जुड़े मामले की सुनवाई की। मामला जम्मू से नई दिल्ली केस ट्रांसफर करने से जुड़ा है। यह याचिका एजेंसी ने लगाई थी। जस्टिस अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने मलिक और अन्य आरोपियों को नोटिस जारी किया और उन्हें 18 दिसंबर तक जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने बेंच को बताया कि अपहरण मामले में मलिक को ट्रायल के लिए जम्मू कोर्ट में फिजिकल पेशी की जरूरत नहीं है क्योंकि तिहाड़ जेल में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा वाली कोर्ट है। इससे पहले 21 नवंबर को पिछली सुनवाई में कोर्ट ने कहा था- आतंकी अजमल कसाब को फेयर ट्रायल मिल सकता है, तो यासीन मलिक को क्यों नहीं। इस मामले में अगली सुनवाई 18 दिसंबर को होगी।

अजमेर दरगाह में मंदिर होने के तीन आधार पेश

हाईकोर्ट के जज की किताब का दिया गया हवाला

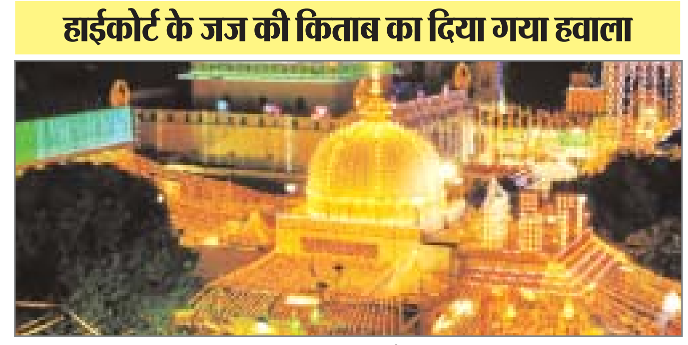

अजमेर (एजेंसी)। अजमेर की ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में संकट मोचन महादेव मंदिर होने का दावा किया गया है। अजमेर सिविल कोर्ट में लगाई गई याचिका को कोर्ट ने सुनने योग्य मानते हुए सुनवाई की अगली तारीख 20 दिसंबर तय की है। याचिका दायर करने वाले हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने मुख्य रूप से 3 आधार बताए हैं। उन्होंने कहा कि 2 साल की रिसर्च और रिटायर्ड जज हरबिलास शारदा की किताब में दिए गए तथ्यों के आधार पर याचिका दायर की है। किताब में इसका जिक्र है कि यहां ब्राह्मण दंपति रहते थे और दरगाह स्थल पर बने महादेव मंदिर में पूजा-अर्चना करते थे। इसके अलावा कई अन्य तथ्य हैं, जो साबित करते हैं कि दरगाह से पहले यहां शिव मंदिर रहा था। कोर्ट ने अल्पसंख्यक मंत्रालय, दरगाह कमेटी और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) को नोटिस जारी किया है। 20 दिसंबर को उन्हें अपना पक्ष लेकर उपस्थित होना है।

इंडियन नेवी ने की बैलिस्टिक मिसाइल की सफल टेस्टिंग

3,500 किलोमीटर की है रेंज, आईएनएस अरिघात से लॉन्चिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन नेवी ने बुधवार को के-4 बैलिस्टिक मिसाइल की सफल टेस्टिंग की। यह टेस्टिंग न्यूक्लियर सबमरीन अरिघात से की गई थी। अरिघात को 2017 में लॉन्च किया गया था। इसका अपग्रेड वर्जन जल्द ही कमीशन किया जाएगा। अरिघात आईएनएस अरिहंत का अपग्रेडेड वर्जन है। इसे विशाखापत्तनम में भारतीय नौसेना के शिप बिल्डिंग सेंटर में बनाया गया था। अरिहंत की तुलना में अरिघात 3500 किलोमीटर की रेंज वाली के-4 मिसाइलों से लैस होगी। इस सबमरीन का वजन 6 हजार टन (60 हजार क्विंटल) है। भारत ने तैयार की परमाणु मिसाइलों से लैस 3 पनडुब्बियां भारतीय नौसेना अब तक 3 न्यूक्लियर सबमरीन तैयार कर चुकी है। इसमें से एक अरिहंत कमीशंड है, दूसरी अरिघात मिलने वाली है और तीसरी के 3 पर टेस्टिंग जारी है। इन सबमरीन के जरिए दुश्मन देशों पर परमाणु मिसाइल दागी जा सकती हैं। 2009 में पहली बार सांकेतिक तौर पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी ने कारगिल विजय दिवस के मौके पर आईएनएस अरिहंत को लॉन्च किया था। इसके बाद 2016 में इसे नौसेना के बेड़े में शामिल किया गया।

संक्षिप्त समाचार

ऊर्जा मंत्री ने विद्युत उपभोक्ताओं से किया सोलर पैनल लगवाने का आव्हान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने ग्वालियर में विद्युत वितरण व्यवस्था तथा वोल्टेज की समस्या को दूर करने के लिए 132/33 केव्ही के नवीन विद्युत वितरण केन्द्र की मंजूरी का ऐलान किया। उन्होंने प्रदेश के विद्युत उपभोक्ताओं से पीएम सूर्य घर योजना का लाभ उठाने की अपील की है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि 3 किलोवाट के सोलर पैनल से हम सालाना 2500 से 3000 रुपए की बचत कर सकते हैं। उन्होंने गुजरात दौरे के अनुभव साझा किया। श्री तोमर ने कहा गुजरात के लोगों में बिजली के सदुपयोग और समय पर बिजली के बिलों को जमा करने की आदत है। ऐसी ही आदत हम मध्यप्रदेश में भी विकसित करें, ताकि बिजली कंपनियों की योजनाओं का लाभ ले सकें। समय पर बिजली बिल जमा करने से बिजली व्यवस्था सुदृढ़ होगी और सरकारी योजनाओं का लाभ हर परिवार तक पहुंचेगा। उन्होंने बताया कि गुजरात की विद्युत वितरण कम्पनी ने 1200 करोड रुपए की छूट का लाभ समय पर बिजली खरीदी का बिल अदा कर हासिल किया। उन्होंने बताया कि पीएम सूर्य घर योजना में सोलर पैनल लगवाने पर 3 किलोवाट तक के लिए डेढ़ लाख तक का खर्च आता है। इस पर 70 हजार रुपए शासन सब्सिडी देता है। उन्होंने बताया कि उपभोक्ता ढाई साल की अवधि में ही इस पर खर्च होने वाली धनराशि की भरपाई कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह योजना न केवल आर्थिक बचत करेगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी आपकी भागीदारी सुनिश्चित करेगी। उन्होंने दोहराया कि आपका सुरक्षित भविष्य, हमारी प्राथमिकता है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा ग्वालियर शहर में वोल्टेज की समस्या को दूर करने के लिए 132/33 केव्ही विद्युत वितरण उप-केन्द्र बनाया जाएगा, जिसके लिए भूमि चयन की प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने कहा कि बिलौआ में विद्युत वितरण उप-केन्द्र के लिए टेंडर मांगे गए हैं। सिकंदर कम्पू में 132/33 केव्ही विद्युत वितरण उप-केन्द्र को मंजूरी दे दी गई है। इसी तरह आने वाले दिनों में शताब्दीपुरम में 132/33 केव्ही का विद्युत वितरण उप-केन्द्र भी बनाया जाएगा। जिसमें 15 किमी लंबी ट्रांसमिशन लाइन और फीडर वे का निर्माण भी शामिल है। यह कदम क्षेत्र में बिजली आपूर्ति को मजबूत बनाते हुए, निर्बाध और विश्वसनीय ऊर्जा सेवाएं सुनिश्चित करेगा।

43वें आईआईटीएफ में मध्यप्रदेश मंडप स्वर्ण पदक से सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दिल्ली स्थित भारत मंडपम में 14 से 27 नवम्बर तक आयोजित हुए 43वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला (आईआईटीएफ) में मध्यप्रदेश के मंडप को राज्यों की श्रेणी में सब्जेक्टिव प्रेजेंटेशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया है। बुधवार को आयोजित एक समारोह में यह पुरस्कार इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन के प्रबंध निदेशक श्री प्रदीप सिंह खरोला ने मध्यप्रदेश मंडप के संचालक श्री बीएन तिवारी को प्रदान किया। कार्यक्रम में एमपीआईडीसी के शाखा प्रबंधक श्री सी के प्रिंस और मध्यप्रदेश मंडप के विशेष सहायक श्री जगमोहन भी उपस्थित थे। मंडप में मेले की थीम 'विकसित भारत-2047' के अनुरूप प्राचीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर के साथ तेजी से विकसित होते मध्यप्रदेश के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। प्रदेश की विकास गाथा को डिजिटल इन्फोपैनल्स के माध्यम से दर्शाया गया था। अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए कांच के स्तंभों के भीतर होलोग्राम से युवा शक्ति, नारी शक्ति, गरीब कल्याण और किसान कल्याण मिशन प्रदर्शित किए गए थे। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष 42वें आईआईटीएफ में भी मध्यप्रदेश मंडप को सब्जेक्टिव प्रेजेंटेशन के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था।

मादा चीता निर्वा स्वस्थ है

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संचालक सिंह परियोजना शिवपुरी ने बताया कि कूनो अभयारण्य में मादा चीता निर्वा की रेडिओ टेलेमेट्री जानकारी के आधार पर निर्वा के डेन साइट से दूर होने पर वन्य-प्राणी चिकित्सकों के नेतृत्व में मॉनीटरिंग दल द्वारा डेन साइट का निरीक्षण किया गया। डेन साइट पर 2 नवजात चीता शावकों के शरीर क्षत-विक्षत रूप में मिले। संचालक सिंह परियोजना ने बताया कि बोमा के अंदर सभी संभावित स्थलों का निरीक्षण करने पर किसी भी अन्य चीता शावक के प्रमाण नहीं मिले। उन्होंने बताया कि मादा चीता निर्वा स्वस्थ है। चीता शावकों के शरीर से सैम्पल लेकर अग्रिम परीक्षण के लिये भेजा गया है। मृत्यु का कारण शव परीक्षण के उपरांत ज्ञात हो सकेगा। उन्होंने बताया कि कूनो में शेष सभी वयस्क चीता एवं 12 शावक स्वस्थ हैं।

जनजातीय नायकों के पुरुषार्थ एवं कृतित्व को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की आवश्यकता-मंत्री श्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अतीत के कालखंडों में इतिहासकारों ने जनजातीय नायकों एवं महापुरुषों के पुरुषार्थ एवं कृतित्व के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास के पन्नों में जनजातीय नायकों के संघर्ष, शौर्य, पराक्रम, बलिदान और त्याग को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत नहीं किया गया। जनजातीय समाज के ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक गौरवपूर्ण योगदान और देश की स्वाधीनता के लिए दिए उनके बलिदान को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। जनजातीय नायकों एवं महापुरुषों के पुरुषार्थ एवं कृतित्व से मात्र जनजातीय समाज नहीं अपितु संपूर्ण राष्ट्र लाभान्वित हुआ। राष्ट्र के लिए जनजातीय योगदान का यह समग्र विचार, जनमानस के समक्ष लाने की आवश्यकता है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय दृष्टि से स्वाधीनता के संघर्ष के सही इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण के साथ भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखने का अवसर प्रदान किया है। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने बुधवार को भोपाल स्थित रविन्द्र भवन के गौरांजनी सभागृह में राष्ट्रीय जनजातीय गौरव

दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के शुभारम्भ अवसर पर कही।

उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि भारत के गौरवशाली इतिहास, श्रेष्ठ ज्ञान परम्परा, सभ्यता, संस्कृति , विरासत, शौर्य, पराक्रम एवं स्वाधीनता के नायकों का बलिदान और उपलब्धियों को, वर्तमान पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी को सही परिप्रेक्ष्य में भारतीय दृष्टिकोण से बताने की आवश्यकता है। श्री परमार ने कहा कि जनजातीय समाज प्रकृति पूजक समाज है। प्रकृति की पूजा में भारतीय सभ्यता का मूल भाव कृतज्ञता है। कृतज्ञता का भाव, हमारी सभ्यता और विरासत है। प्रकृति, जल स्त्रोतों एवं सूर्य सहित समस्त ऊर्जा स्त्रोतों के प्रति कृतज्ञता का भाव भारतीय समाज में परम्परागत रूप से आदिकाल से विद्यमान है। भारत का ज्ञान विश्व मंच पर ईसा से हजारों वर्षों पूर्व भी सर्वश्रेष्ठ था, इसलिए भारत विश्व गुरु के रूप में सुशोभित था। हम सभी को भारत के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान पर गर्व का भाव जागृत कर, देश को पुनः विश्व मंच पर सिरमौर बनाने में सहभागिता करने की आवश्यकता है। इसके लिए भारतीय उपलब्धियों पर हीन भावना से बाहर आकर, स्वत्व का भाव जागृत करना होगा। जनजातीय नायकों के अपने अस्त्र-शस्त्र होते थे, जो वे स्वयं निर्माण करते थे। ईसा पूर्व ही जनजातीय समाज, श्रेष्ठ लोहा निर्माण करते रहे हैं। जनजातीय समाज के ऐसे कई कृतित्व, आज भी विद्यमान है। ऐसे कृतित्व का पुनः अध्ययन, शोध एवं अनुसंधान कर, तथ्यपूर्ण एवं सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। श्री परमार ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को भारतीय ज्ञान परम्परा से समृद्ध करने का अवसर है।

बाघ के रेस्क्यू में जुटी टाइगर रिजर्व की टीम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उमरिया जिले के बाँधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बाघ के गले में फंदे की जानकारी मिलने के बाद टाइगर रिजर्व टीम रेस्क्यू में जुटी हुई है।

सोमवार को पर्यटन के दौरान पर्यटकों को हितौली जोन के डमडमा नाले के पास बाघ दिखायी दिया था। पर्यटकों ने बाघ के फोटो और वीडियो भी बनाये। फोटो में बाघ के गले में तार जैसा दिखायी दिया। जानकारी मिलने के बाद टाइगर रिजर्व प्रबंधन बाघ के रेस्क्यू की तैयारी में जुट गया। सोमवार की शाम से ही रेस्क्यू टीम बाघ की तलाश कर रही है। मंगलवार को बाघ की तलाश में दो हाथियों और कर्मचारियों को ड्यूटी पर लगाया गया, लेकिन बाघ लगातार अपनी मूवमेंट बदलता रहा और उसके घने जंगल में चले जाने से रेस्क्यू नहीं किया जा सका। अब बाघ की तलाश में रेस्क्यू ऑपरेशन बुधवार से शुरू किया जायेगा। रेस्क्यू टीम ने जंगल में सर्चिंग शुरू कर दी है। बाँधवगढ़ टाइगर रिजर्व के उप संचालक श्री पी.के. वर्मा ने बताया कि बाघ के रेस्क्यू के लिये खितौली जोन के कुछ एरिया में पर्यटन को बंद कर दिया गया है। गले में फंदा लगा बाघ स्वस्थ होने के कारण लगातार अपनी मूवमेंट बदल रहा है।

नर्सरियों को सेल्फ सेन्सटेविल थीम पर विकसित किया जाये-उद्यानिकी मंत्री श्री कुशवाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में उद्यानिकी विभाग द्वारा विकसित की जा रही हाईटेक नर्सरियों को सेल्फ सेन्सटेविल मॉडल पर विकसित किया जाये। यह निर्देश उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने मंत्रालय में विभागीय योजनाओं की समीक्षा बैठक में दिये। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि प्रदेश में उद्यानिकी फसलों की विपुल संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए कृषकजन को उन्नत बीज के स्थान पर उन्नत किस्म के पौधे उपलब्ध कराये जाना चाहिये। नर्सरियों को आत्म-निर्भर बनाने के लिये आय के आधार पर प्रत्येक नर्सरी को एक रिवाल्विंग फण्ड दिया जाना चाहिये, जिससे वह अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा कर सके। बैठक में संचालक उद्यानिकी श्री बी.एस. सिंह, प्रबंध संचालक एम.पी. एग्रो श्री दिलीप कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

प्रदेश में शीघ्र राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की जायेगी। इसमें उद्यानिकी के काम आने वाले सभी सेक्टर की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। कृषक भाईयों को शासन की योजनाओं और ऋण प्रकरण के लिए बैंकर्स को भी आमंत्रित किया जाएगा।

मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि के सकल घरेलू उत्पाद में प्रदेश की उद्यानिकी फसलों की भागीदारी 11.37 प्रतिशत है। इसको बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। इसके लिए किसानों को उद्यानिकी फसलों के लिये प्रेरित किया जाये। उन्होंने निर्देश दिये कि विभाग की फ्लेगशिप स्कीम हाईटेक नर्सरी विकास की नियमित मॉनीटरिंग वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा की जाये। मंत्री श्री कुशवाह ने निर्देश दिये कि एम.पी. एग्रो से गेंदे के साथ-साथ अन्य पुष्प कच्ची गुलदावदी, गिलार्डिया, एस्टर की भी दरें निर्धारित की जायें।

उन्होंने ग्वालियर जिले के खुरेरी ग्राम में विकसित की जा रही हाईटेक फ्लोरी कल्चर नर्सरी का कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाये।

उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये सब्जेक्टिव प्रेजेंटेशन - राज्य के मण्डप में स्वर्ण पदक से पुरस्कृत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नई दिल्ली में आयोजित भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला-2024 में भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन नई दिल्ली द्वारा मध्यप्रदेश राज्य मण्डप को सब्जेक्टिव प्रेजेंटेशन में स्वर्ण पदक से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक इण्डिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन श्री प्रदीप सिंह खरोला ने प्रदान किया। मध्यप्रदेश की ओर से पुरस्कार पेवेलियन डायरेक्टर श्री बी.एन. तिवारी ने प्राप्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला नई दिल्ली में 19 नवम्बर को मध्यप्रदेश मण्डप का उद्घाटन किया था। इस अवसर पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री चेतन्य कुमार काश्यप, केन्द्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास श्रीमती सावित्री ठाकुर और नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री सुश्री प्रतिमा बागरी भी उपस्थित थीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मध्यप्रदेश दिवस समारोह में जबलपुर से श्री जानकी बैण्ड एवं सागर के अखाड़ा लोक-नृत्य की प्रस्तुति की गयी थी। मेले में निर्मित मध्यप्रदेश मण्डप में थीम के अनुरूप प्राचीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर के साथ तेजी से बढ़ते एवं विकसित होते हुए मध्यप्रदेश के रूपरूप को प्रदर्शित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की घोषणा के अनुसार विकास के 4 मिशन युवा शक्ति, नारी शक्ति, गरीब कल्याण और किसान कल्याण को होलोग्रॉफिक इमेज के माध्यम से दर्शाया गया।

मध्यप्रदेश मण्डप में 11 शासकीय विभागों, निगम मण्डलों, 14 स्वास्थ्य संस्था समूह, 23 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाइयों और 3 स्टार्ट-अप द्वारा भाग लिया गया। मध्यप्रदेश मण्डप में डिण्डोरी के गोंड आर्ट, छतरपुर के टेराकोटा एवं बैतूल के बेलमेटल शिल्प का सजीव प्रदर्शन किया गया।

म.प्र. पर्यटन को मिला 'बेस्ट टूरिज्म स्टेट ऑफ द ईयर'

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग को नई दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित ट्रेवल एंड टूरिज्म कॉन्क्लेव एंड अवार्ड्स में 'बेस्ट टूरिज्म स्टेट ऑफ द ईयर' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पर्यटन क्षेत्र में प्रदेश द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों और उपलब्धियों का प्रमाण है। प्रदेश की अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, और विश्व स्तरीय पर्यटन स्थलों के प्रचार-प्रसार के लिये पर्यटन विभाग द्वारा नवाचार किये जा रहे हैं। विभाग द्वारा पर्यटन स्थलों पर आधारभूत संचरना, कनेक्टिविटी में सुधार, स्थानीय समुदाय के लिये रोजगार के नए अवसर सृजित किये जा रहे है। इससे मध्यप्रदेश देश-विदेश के पर्यटकों का पसंदीदा गंतव्य स्थान बन गया है। प्रमुख सचिव पर्यटन व संस्कृति विभाग एवं प्रबंध संचालक म.प्र. टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान प्रदेश में पर्यटकों को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करने के लिये हमारे प्रयासों को और गति प्रदान करेगा।

मानव तस्करी और मानव दुर्व्यापार को रोकने आयोजित होगी राज्य स्तरीय कार्यशाला-मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने कहा कि मजदूरी के बहाने महिलाओं और बच्चियों की ट्रैफिकिंग पर कड़ी कार्रवाई करना होगी। जनजातीय क्षेत्रों में मानव तस्करी एवं उनके दुर्व्यापार को रोकने के लिये ग्रामीण क्षेत्र में मैदानी अमलों और हाई-वे पर भी तैनात कर्मियों को सोर्स, ट्रांजिट और डेस्टिनेशन के ग्रामों की पहचान करने के लिये प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है। मंत्री सुश्री भूरिया ने बुधवार को मंत्रालय में मानव तस्करी व दुर्व्यापार जैसे संवेदनशील मुद्दे पर बैठक ली। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से चर्चा कर स्वयंसेवी संस्थाओं की सहायता से मानव दुर्व्यापार और मानव तस्करी में बदलते रुझान और उनसे निपटने की रणनीति और जागरूकता लाने के लिये जल्द ही राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित करने के निर्देश दिये।

मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि महिलाओं और बच्चियों को मानव तस्करी व दुर्व्यापार से बचाने के लिये डेडिकेटेड टीम की आवश्यकता होगी, तभी इसके सकारात्मक परिणाम आएंगे। उन्होंने कहा कि खेती-किसानी के लिये मजदूरी के बहाने महिलाओं और बच्चियों की ट्रैफिकिंग पर कडी कार्यवाही करना होगी। मैदानी स्तर पर कार्यकर्ताओं व गांव के कोटवारों को मानव तस्करी रोकने की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। मानव तस्करी के तरीके और नेटवर्क, तकनीकी प्रगति, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों और वैश्विक घटनाओं से प्रभावित होकर लगातार विकसित हो रहे हैं। इसलिए कार्यशाला के माध्यम से इसकी रोकथाम के लिये विभिन्न स्तरों पर चर्चा के बाद निष्कर्ष निकाला जा सकता है और प्रदेश में मानव तस्करी एवं दुर्व्यापार की घटनाओं में कमी लायी जा सकती है।

सुभाष उत्कृष्ट स्कूल में हुई वेस्ट जोन इंटर स्कूल बैंड प्रतियोगिता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के सुभाष उत्कृष्ट स्कूल में आज पश्चिम क्षेत्रीय (वेस्ट जोन) की इंटर स्कूल बैंड प्रतियोगिता का शुभारंभ आयुक्त लोक शिक्षण श्रीमती शिल्पा गुप्ता ने खुले आकाश में गुब्बारे छोड़कर किया। बालक वर्ग की प्रतियोगिता में वेस्ट जोन के 6 राज्यों मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र गोवा एवं केन्द्र शासित प्रदेश दमन-दीव और दादर नगर हवेली के बालक वर्ग के विजेता प्रतिभागी शामिल हुए। प्रतियोगिता में 240 बालकों ने पाइप बैंड एवं ब्रास बैंड विधा में शानदार प्रस्तुतियां दी। आयुक्त लोक शिक्षण श्रीमती गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि स्कूली बच्चों की बैंड की शानदार प्रस्तुतियों से

मध्यप्रदेश के अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास है कि स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों का समग्र विकास हो। इसके लिये जरूरी है कि बच्चे पढ़ाई के साथ अन्य रचनात्मक गतिविधियों से भी जुडें। लोक शिक्षण आयुक्त ने अन्य राज्यों से आये प्रतिभागी विद्यार्थियों और अधिकारियों का राजधानी भोपाल में स्वागत किया। प्रतियोगिता में ब्रास बैंड विधा में प्रथम स?थान पर राजस्थान की टीम रही। वहीं द्वितीय स?थान महाराष्ट्र की टीम ने तथा तृतीय स?थान मध्यप्रदेश की टीम ने प्राप?त किया। पाइप बैंड विधा में महाराष्ट्र प्रथम, मध्यप्रदेश द्वितीय और गुजरात की टीम तृतीय स्थान पर रहीं। संचालक लोक शिक्षण श्री डी.एस. कुशवाह ने विजेता टीम को पुरस्कार प्रदान किये। उल?लेखनीय है कि पश्चिम क्षेत्रीय इस प्रतियोगिता में पाइप बैंड एवं ब्रास बैंड विधा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिका और बालक वर्ग की चारों टीमें गणतंत्र दिवस-2025 के उपलक्ष्य में राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में 24 एवं 25 जनवरी 2025 को नई दिल्ली में सहभागिता करेगी।

कमिश्नर रीवा संभाग ने किया मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य का निरीक्षण

विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में विशेष अभियान चलाने व सभी पात्रों के नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कमिश्नर रीवा संभाग श्री बीएस जामोद द्वारा सीधी प्रवास के दौरान मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य का निरीक्षण किया गया। कमिश्नर द्वारा बढ़ौरा तथा पनवार मतदान केन्द्र में बीएलओ द्वारा किए गए कार्यों के प्रगति की समीक्षा की गई। कमिश्नर ने उपस्थित राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य की सतत निगरानी रखें तथा भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार समस्त कार्यवाहियां समय-सीमा में पूर्ण करना सुनिश्चित करें। कमिश्नर श्री जामोद ने कहा कि आयोग के निर्देशानुसार 01 जनवरी 2025 की स्थिति में सभी पात्र व्यक्तियों के नाम मतदाता सूची में दर्ज करायें। जिले के सभी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में नवीन मतदाताओं के नाम जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाएं। विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले छात्र-छात्राओं के नाम जोड़ने के आवेदन करा लें तथा आवश्यक जांच कर नाम जोड़ने की कार्यवाही की जावें। कमिश्नर ने कहा कि ऐसे मतदान केन्द्र जहां ईपी रेशियों कम है वहां विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। सभी मतदान केन्दों में डोर-टु-डोर सर्वे कराकर पात्र मतदाताओं का नाम जोड़ने की कार्यवाही सुनिश्चित करें। इसके साथ ही कमिश्नर ने मृत मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से विलोपित करने के भी निर्देश दिए हैं।

कमिश्नर ने आंगनवाड़ी और विद्यालयों का निरीक्षण किया: भ्रमण के दौरान कमिश्नर रीवा संभाग द्वारा आंगनवाड़ी केन्द्र तथा विद्यालयों का निरीक्षण किया गया। पूर्व माध्यमिक शाला बढ़ौरा पूर्व में छात्र उपस्थिति कम पाये जाने तथा बच्चों की पढ़ाई का स्तर अनुरूप नहीं पाए जाने पर प्रभारी प्रधानाध्यापक सुषमा मिश्रा के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करते हुए एक वेतन वृद्धि रोकने के निर्देश दिए हैं। उन्होने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पनवार में कक्षा 12वीं के बच्चों से संवाद किया तथा उन्हे अच्छे परिणाम लाने के लिए प्रोत्साहित किया। कमिश्नर ने उपखण्ड अधिकारी तथा तहसीलदार को विद्यालयों में निरंतर भ्रमण करने तथा बच्चों को उचित मार्गदर्शन प्रदाय करने का निर्देश दिया है।

राजस्व महाअभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश: कमिश्नर श्री जामोद ने तहसील गोपद बनास तथा बहरी अंतर्गत राजस्व महाअभियान 3.0 के ₹ि यान्वयन की समीक्षा कर प्रभावी ₹ि यान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। कमिश्नर ने कहा कि बटवारा, सीमांकन, नामांतरण, परंपरागत रास्तों का चिन्हांकन, नक्शा सुधार, आधार खसरा लिंकेज, अभिलेख दुरुस्तगी के प्रकरणों का निराकरण अपेक्षा अनुरूप नहीं है इसे विशेष प्रयास करके प्राथमिकता से निराकरण करें। उन्होंने उपखण्ड अधिकारियों को अभियान की नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए हैं। भ्रमण के दौरान उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, उपखण्ड अधिकारी सिहावल एसपी मिश्रा, तहसीलदार गोपद बनास जान्हवी शुक्ला, तहसीलदार बहरी सीपी त्रिवेदी, नायब तहसीलदार गोपद बनास निवेदिता त्रिपाठी उपस्थित रही।

विकासखंड स्तरीय दिव्यांग खेलकूद प्रतियोगिता 30 को

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। विकासखंड स्तरीय दिव्यांग खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन जनपद शिक्षा केंद्र सीधी में 30 नवंबर को आयोजित किया जाएगा। छात्रों का खेलकूद एवं समर्थ प्रदर्शन संजय गांधी कॉलेज के प्रांगण में किया जाएगा अतः सभी विकासखंड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के संस्था प्रमुख जहां कक्षा एक से आठवीं तक के दिव्यांग छात्र एवं छात्रस अध्ययनरत् है उन दिव्यांग छात्रों को संस्था प्रमुख प्रतियोगिता में सम्मिलित हो एवं सहयोग प्रदान करें यह जिम्मेदारी संस्था प्रमुखों की है कि वहां के वह स्वयं लेकर आए या की किसी शिक्षक की ड्यूटी लगाई जिससे छात्रों को लाना एवं उनका घर तक सुरक्षित पहुंचना उनकी जिम्मेदारी होगी इस खेलकूद के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं की जाएगी जिसमें 100 मीटर दौड़ गोला फेक कुर्सी दौड़ नींबू चम्मच दौड़ कुर्सी दौड़ होगी इस कार्यर्₹ म में 2022.23 में जो विद्यालय के शिक्षक इतंपस सपचप में एवं सांकेतिक भाषा में प्रशिक्षण लिए थे उन शिक्षकों को भी इस कार्यर्₹ म में आना अनिवार्य है यह राज शिक्षा केंद्र का निर्देश है इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रथम पद्धति एवं तिथि स्थान वाले बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा एवं जो छात्र किसी प्रतियोगिता में सफ्ल नहीं होते हैं उन्हें भी पुरस्कृत किया जाएगा एवं साथ में लंच की भी व्यवस्था की गईं हैं।

पुलिस ने हम होंगे कामयाब पखवाड़ा के तहत जागरूकता अभियान प्रारम्भ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला पुलिस बल द्वारा हम होंगे कामयाब पखवाड़ा के अंतर्गत थाना क्षेत्र के गर्ल्स स्कूल, कालेज, झुग्गी बस्तियों, सार्वजनिक स्थानों पर छात्राओं एवं महिलाओं को उनके अधिकारों कानूनों की जानकारी से कराया जा रहा अवगत। बताया गया कि मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश शासन डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार मध्य प्रदेश में 25 नवंबर से हम होंगे कामयाब पखवाड़ा की शुरुआत की गई है जो 25 नवंबर से 10 दिसंबर 2024 तक चलेगा। जिसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं की सुरक्षा, सशक्तिकरण और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। इसके लिए सभी जिलों में तरह.तरह के जागरुकता अभियान भी चलाए जाएंगे। महिलाओं का सम्मान समाज के हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है, इसलिए पखवाड़ा मनाया जा रहा है, ताकि पुरुष अपनी सोच और व्यवहार में बदलाव लाकर समाज में फैले नकारात्मक दृष्टिकोण को चुनौती दे सके। इसके लिए जन्म से ही अपने घर में लड़कों को सिखाना होगा कि वह हर बेटी और महिलाओं का सम्मान करें। उनके साथ किसी तरह के शारीरिक शोषण या हिंसा न हो। परिवार और समाज में समानता का माहौल बनाकर बेटे.बेटी के बीच भेदभाव समाप्त करें तभी एक बेहतर समाज का निर्माण हो पाएगा। उक्त निर्देशों के परिपालन में पुलिस अधीक्षक सीधी डॉ.रविन्द्र वर्मा के निर्देशन में शहर एवं देहात के गर्ल्स स्कूल, कालेज, झुग्गी बस्तियों, सार्वजनिक स्थानों पर छात्राओं एवं महिलाओं को उनके अधिकारों की जानकारी से अवगत कराया जा रहा है।

स्वानिधि भी स्वाभिमान भी - हितग्राहियों को किया जा रहा लाभान्वित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार 18 नवंबर से 2 दिसंबर तक स्वानिधि भी- स्वाभिमान भी पखवाड़ा आयोजित किया जा रहा है। अभियान के तहत नगर पालिका परिषद सीधी द्वारा सभी पात्र हितग्राहियों को पीएम स्वनिधि योजना के तहत बैंको से ऋण वितरण के साथ डिजिटल पेमेंट हेतु पथ विर्₹ ताओं को जागरूक किया जाकर लाभान्वित किया जा रहा है।

बाल विवाह मुक्त भारत देश अभियान का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। बाल विवाह मुक्त भारत देश अभियान का शुभारंभ कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशन तथा जिला कार्यर्₹ म अधिकारी के मार्गदर्शन में 27 नवंबर को ''हम होंगे कामयाब पखवाड़ा'' के अंतर्गत किया गया। सीधी परियोजना ₹ मांक 1 में बाल विवाह मुक्त देश के कार्यर्₹ म का सीधा प्रसारण परियोजना अधिकारी आशा तिवारी एवं सभी सुपरवाइजर, वन स्टॉप सेंटर की प्रशासक और कर्मचारी तथा समस्त आंगनवाड़ी कार्यकर्ता- सहायिका व ममत्व महिला मंडल की अध्यक्ष उमा सेन की उपस्थिति में हुआ। प्रसारण के बाद जिले को बाल विवाह मुक्त कैसे बनाया जाए इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई।

इसके बाद साईं महा विद्यालय सीधी में छात्राओं को बाल विवाह के दुष्परिणाम बताया गया एवं बाल विवाह रोकने हेतु शपथ दिलाया गया। शाम को वन स्टॉप सेंटर में जिला कार्यर्₹ म अधिकारी आर सी त्रिपाठी एवं सहायक संचालक अवधेश सिंह व उमा सेन की उपस्थिति में प्रतिज्ञा के साथ शहर में कैंडल मार्च निकाला गया जिसमें नारे लगाए गए कि हम सब ने यह ठाना है, बाल विवाह मिटाना है।

सांसद मिले संचार मंत्री सिंधिया से

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ राजेश मिश्रा केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से मिलकर संपूर्ण लोकसभा संसदीय क्षेत्र को मोबाइल नेटवर्क से जोड़ने के संबंध में मुलाकात कर चर्चा की। भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया से चर्चा उपरांत लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा ने कहा कि जिले के लगभग 200 से अधिक मतदान केंद्र मोबाइल नेटवर्क विहीन है। इसी प्रकार से लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सुदूर अंचल के क्षेत्र जहां मोबाइल नेटवर्क की सुविधा अभी उपलब्ध नहीं हो पाई है, उन सभी लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सभी क्षेत्रों को मोबाइल नेटवर्क से जोड़ा जाए।

जेण्डर आधारित हिंसा के विरूद्ध जागरूकता गतिविधियों का किया जा रहा है आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। विकासखण्ड प्रबंधक म.प्र.डे.राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन विकासखंड सिहावल ने बताया कि नई चेतना जेण्डर आधारित हिंसा के विरूद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान 3.0 के तहत सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्र में राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन की महिला स्व सहायता समूह सदस्यों के साथ विभिन्न जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इन गतिविधियों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के संदेश का प्रसार महिलाओं के बीच किया जाकर महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। मध्यप्रदेश ग्रामीण आजीविका मिशन सीधी जिला से हरिराम त्रिपाठी एवं अजय सिंह ने बताया कि समूह से जुड़ी महिलाओं को नई चेतना जेण्डर आधारित हिंसा के विरूद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान 3.0 के बारे में बताकर जागरूक करने का प्रयास मैदानी स्टॉफद्वारा किया जा रहा है। जागरूक गतिविधियों के तहत रंगोली, संगोष्ठि, शपथ आदि गतिविधियां संचालित की जा रही है।

अवैध खनिज उत्खनन एवं परिवहन पर 20 लाख रुपये की जप्ती, प्रकरण पंजीबद्ध

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। पुलिस अधीक्षक डॉ. रविन्द्र वर्मा के निर्देशन एवं अति.पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव तथा थाना प्रभारी मझौली के नेतृत्व में मड़वास पुलिस द्वारा अवैध रूप से रेत का उत्खनन एवं परिवहन कर रहे वाहन को जप्त कर चालक के विरुद्ध मामला किया पंजीबद्ध। पुलिस द्वारा बताया गया कि 27 नवम्बर 24 को चौकी प्रभारी मड़वास को रात्रि गस्त के दौरान जरिये मुखविर सूचना मिली कुसमी तरफसे बिना नंबर का हाईवा अवैध रेत लोड कर भदौरा तरफ आ रहा है। मुखविर सूचना से चौकी प्रभारी मड़वास द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों को उक्त सूचना से अवगत कराया गया साथ ही सूचना की पुष्टि एवं विधिक कार्यवाही हेतु त्वरित रूप से टीम गठित कर घटना स्थल की ओर रवाना किये। टीम भदौरा फाटक के पास जाकर उक्त वाहन का इंतजार किये जो कुछ देर बाद एक बिना नंबर का हाईवा आता हुआ दिखाई दिया जिसे हमराह स्टॉफके सहयोग से रोका गया तथा वाहन चेक करने पर आगे पीछे नंबर प्लेट नही थी एवं वाहन में रेत लोड़ थी। चालक का नाम पता पूछने पर अपना नाम विजय कुमार यादव पिता हिंछपति यादव उम्र 31 वर्ष निवासी मुड़िका थाना बहरी जिला सीधी का होना बताया। जिससे रेत परिवहन के संबंध में वैद्य दस्तावेज की मांग की गई जो कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत नही किया आरोपी चालक का उक्त कृत्य भारतीय न्याय संहिता की धारा 303/2, 317/5 एवं खान एवं खनिज अधिनियम की धारा 4/ 21 का अपराध पाये जाने पर आरोपी उक्त के विरूद्ध अपराध कायम कर हाईवा रेता भरा हुआ कुल कीमती 20.24 लाख रूपये जप्त कर अग्रिम कार्यवाही की जा रही है। उपर्युक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी मझौली उनि दीपक बघेल, चौकी प्रभारी मड़वास उनि केदार परौहा, प्रआर खतकराज सिंह एवं आरक्षक मोनू राठौर का विशेष योगदान रहा।

संजय गांधी स्मृति शासकीय महाविद्यालय में लोकगीत एवं भारतीय ज्ञान परंपरा पर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में लोकगीत एवं भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। डॉ. रामनारायण स्वर्णकार के कुशल नेतृत्व में कार्यर्₹ मों का लगातार आयोजन किया जा रहा है। दिनांक 22.11.2024 को भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत लोकगीत प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। लोकगीत प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. विनोद कुमार साकेत सहायक प्राध्यापक हिंदी के द्वारा किया गया जिसमें छात्र एवं छात्राएं सम्मिलित हुए। प्रथम स्थान आकांक्षा साहू बीएससी प्रथम वर्ष, द्वितीय स्थान संजय कुमार यादव बीएससी प्रथम वर्ष, तृतीय स्थान अनीता साहू बीएससी प्रथम वर्ष प्राप्त किए।

लोकगीत प्रतियोगिता के मुख्य निर्णायक डॉ विनोद कुमार साकेत (सहायक प्राध्यापक हिंदी), डॉ विभा कुशवाहा (अतिथि विद्वान अर्थशास्त्र), डॉ आशुतोष पाण्डेय (अतिथि विद्वान भौतिक शास्त्र)। लोकगीत प्रतियोगिता में डॉ रामनारायण स्वर्णकार नोडल अधिकारी भारतीय ज्ञान परंपरा ने छात्राओं के समक्ष भजन गाकर छात्रों का उत्साहवर्धन किया। साथ ही डॉ आशुतोष पाण्डेय (अतिथि विद्वान राजनीति विज्ञान)ने लोकगीत गायन कर छात्रों को लोकगीत के प्रति उत्साहित करने का प्रयास किया। इस कार्यर्₹ म में डॉ विनोद कुमार साकेत सहायक प्राध्यापक हिंदी, डॉ राकेश कुमार प्रजापति सहायक प्राध्यापक भूगोल, डॉ कोमल पाण्डेय अतिथि विद्वान समाजशास्त्र, डॉ विभा कुशवाहा अतिथि विद्वान अर्थशास्त्र, डॉ आशुतोष पाण्डेय (अतिथि विद्वान भौतिक शास्त्र) व रामनारायण स्वर्णकार (नोडल अधिकारी भारतीय ज्ञान परंपरा) एवं मनोज कुमार प्रजापति उपस्थित रहे।

दिनांक 25.11.2024 को भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के संयोजक श्री राकेश कुमार प्रजापति (सहायक प्राध्यापक भूगोल) द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 9 छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया जिन्हें मुख्य तीन टीमों में विभाजित किया गया था। प्रथम विजेता टीम अंजली सिंह बीए तृतीय वर्ष, अनामिका तिवारी बीए तृतीय वर्ष, आंचल सिंह बीए तृतीय वर्ष। द्वितीय विजेता टीम खेलेश्वर साकेत बीए तृतीय वर्ष, राम ललन सिंह बीए तृतीय वर्ष, बुद्धि सागर गुप्ता बीए तृतीय वर्ष एवं तृतीय विजेता टीम साधना कुशवाहा एमएससी प्रथम सेमेस्टर, अमर साकेत एमएससी चतुर्थ सेमेस्टर संजय कुमार यादव बीएससी प्रथम वर्ष रहे हैं।

डॉ राकेश कुमार प्रजापति, डॉ अश्वनी द्विवेदी, डॉ विनोद कुमार साकेत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के मुख्य निर्णायक थे। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में एक्सीलेंस कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी.के. सिंह, डॉ अश्वनी कुमार द्विवेदी (सहायक प्राध्यापक इतिहास), डॉ विनोद कुमार साकेत (सहायक प्राध्यापक हिंदी), श्री अमित कश्यप (अतिथि विद्वान भूगोल), एवं डॉ रामनारायण स्वर्णकार नोडल अधिकारी भारतीय ज्ञान परंपरा, एवं श्री मनोज कुमार प्रजापति के सहभागिता से सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता सफ्लतापूर्वक संपन्न हुआ। महाविद्यालय स्तर पर विविध प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस सीधी में दिनांक 09-12-2024 से 14-12-2024 तक आयोजित होगी।

बाल विवाह मुक्त सीधी का हुआ शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला कार्यर्₹ म अधिकारी के मार्गदर्शन में हम होगे कामयाब पखवाड़ा के अंतर्गत सीधी परियोजन 1 में बाल विवाह मुक्त देश के कार्यर्₹ म का सीधा प्रसारण परियोजना अधिकारी आशा तिवारी एवं सभी सुपरवाइजर, वन स्टॉप सेंटर की प्रशासक और कर्मचारी तथा समस्त आंगन वाणी कार्यकर्ता और सहायिका व ममत्व महिला मंडल की अध्यक्ष उमा सेन की उपस्थिति में हुआ। प्रसारण के बाद बाल विवाह मुक्त कैसे बनाया जय इस विस्तृत रूप से चर्चा की गई। साईं महाविद्यालय सीधी में छात्राओं को बाल विवाह के दुष्परिणाम बताया गया एवं बाल विवाह रोकने हेतु शपथ दिलाया गया। शाम को 6 बजे वन स्टॉप सेंटर में जिला कार्यर्₹ म अधिकारी आर.सी.त्रिपाठी एवं सहायक संचालक अवधेश सिंह की उपस्थिति व उमा सेन की व्यवस्था में प्रतिज्ञा के साथ शहर में कैंडल मार्च निकाला गया। जिसमे नारे लगाए गए कि हम सब ने यह ठाना है, बाल विवाह मिटाना है एवं सभी को जिला कार्यर्₹ म अधिकारी द्वारा संबोधित कर बताया गया।

विचार

भाजपा की कामयाबी से बढ़ी कांग्रेस की मुश्किलें

राजस्थान के सात विधानसभा उपचुनाव के परिणामों ने छोटे राजनीतिक दलों और विपक्षी कांग्रेस को करारी हार दी है। इस हार ने कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के भविष्य को अनिश्चितता की ओर मोड़ दिया। इस वर्ष के प्रारम्भ में भाजपा, दो विधानसभा उपचुनावों में हार चुकी थी। साफ है जून में कांग्रेस, जो गठबंधन को लोकसभा की 25 में से 11 सीटें दे चुकी थी, ने 7 में से 5 विधानसभा सीटों पर विजय प्राप्त कर संगठनात्मक मजबूती हासिल की। यह अप्रत्याशित जीत मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की सरकार को संकट से उबारने में सफल रही। इन सात विधानसभा सीटों में से भाजपा ने पांच सीटें—झुंझुनू, रामगढ़, देवली-उनियारा, खींवसर और सलूंबर—जीतीं, जबकि भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) ने चौरासी सीट और कांग्रेस ने दौसा सीट पर विजय प्राप्त की। इस बार के चुनाव परिणामों का निष्कर्ष है कि मतदाताओं ने परिवारवाद और सहानुभूति की राजनीति को नकार दिया। कांग्रेस ने रामगढ़ सीट पर स्व. जुबेरखान के बेटे, आर्यन जुबैर को सहानुभूति आधारित जीत के लिए खड़ा किया था, जबकि इस सीट पर स्व. जुबैर चार बार और एक बार उनकी पत्नी साफिया कांग्रेस की विधायक रह चुकी थीं। बावजूद इसके, भाजपा के सुखवंत सिंह ने आर्यन को भारी शिकस्त दी। झुंझुनू विधानसभा सीट, जो ओला परिवार के नाम से प्रसिद्ध है, से जाट नेता स्व. शीशराम ओला ने 8 बार विधानसभा और 5 बार लोकसभा चुनाव जीते थे। इस बार उनके पुत्र बृजेंद्र ओला, जो जून में सांसद चुने गए थे, अपने पुत्र अमित ओला को विजय दिलाने में असफल रहे। भाजपा के राजेंद्र भांबू ने भारी मतों (42,848) से जीत हासिल की। सहानुभूति लहर का फायदा भाजपा ने सलूंबर सीट पर उठाया, जहां स्व. अमृतलाल मीणा की पत्नी, शांता देवी मीणा (जो तीन बार सरपंच रह चुकी हैं), अंतिम राउंड की गिनती में 1285 वोट से जीत गईं। बीएपी के प्रत्याशी जीतेश कटारा ने चुनाव आयोग से भाजपा सरकार द्वारा सत्ता के दुरुपयोग की शिकायत की थी। बीएपी प्रमुख और डूंगरपुर सांसद राजकुमार रोत ने भी चुनाव आयोग को शिकायत की कि उनकी पार्टी सलूंबर सीट पर एकतरफा जीत रही थी, लेकिन भाजपा सरकार ने सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग करते हुए जल्दी-जल्दी मतगणना करा कर अपने प्रत्याशी को जीत का सर्टिफिकेट दिलवा दिया। आरएलपी पार्टी को सबसे बड़ा नुकसान हुआ, क्योंकि पार्टी प्रमुख और नागौर से सांसद हनुमान बेनीवाल अपनी पत्नी कनिका बेनीवाल को खींवसर विधानसभा सीट पर नहीं जिता सके। उनकी पार्टी राजस्थान विधानसभा में भी शून्य पर रही।

जलवायु परिवर्तन के खतरों से बच्चों को बचाएं

ललित गर्ग

हाल ही में प्रस्तुत हुई यूनिसेफ की रिपोर्ट 'द यूचर ऑफ चिल्ड्रेन इन चेंजिंग वर्ल्ड' ने भारत में बच्चों के भविष्य को लेकर उत्पन्न चुनौतियों, त्रासद स्थितियों एवं भयावह भविष्य को उजागर किया है। इस रिपोर्ट में जिक्र किया गया है कि साल 2050 तक भारत में 35 करोड़ बच्चे जनसांयिकीय बदलावों, जलवायु संकट, कृत्रिम बुद्धिमाा और तकनीकी बदलावों की चुनौतियों का सामना कर रहे होंगे। उस समय जन्म लेने वाले बच्चों को जन्म के बाद जीवन में जलवायु परिवर्तन के संकटों से जुझना होगा, भीषण लू, गरमी, बाढ़, तूफान, चक्रावात और अनेक जलवायु जनित बीमारियों से सामना करना होगा। वायु प्रदूषण की विभीषिका, गहराते जल संकट, सिमटते प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन व रोजगार की विसंगतियों के बीच आने वाली पीढ़ी के बच्चों का जीवन निस्संदेह संघर्षपूर्ण, चुनौतीपूर्ण एवं संकटपूर्ण होगा।

वर्ष 2021 में बच्चों के जलवायु जोखिम सूचकांक में भारत कुल 163 देशों की सूची में 26वें स्थान पर था। ऐसे में भारत में बच्चों को अधिक गर्मी, बाढ़ और वायु प्रदूषण से गंभीर जोखिम का सामना करना पड़ता है। खासकर ग्रामीण और कम आय वाले समुदायों में यह संख्या ज्यादा है। लेकिन रिपोर्ट बताती है कि 2050 में बच्चों को 2000 के दशक की तुलना में लगभग आठ गुना ज्यादा गर्मी झेलनी पड़ सकती है। जाहिर है, जलवायु संकट बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा तथा पानी जैसे आवश्यक संसाधनों तक उनकी पहुंच पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। चिंता की बात यह है कि इन तमाम विसंगतियों, विषमताओं व नेतृत्व की अदूरदर्शिता के बीच बच्चों के भविष्य पर मंडरा रहे खतरों के लिये संवेदनशीलता के साथ सावधान एवं सतर्क होने एवं उचित-प्रभावी कार्ययोजना बनाने की जरूरत है।

इसी तरह, गहरे डिजिटल विभाजन के बीच एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता बच्चों के लिए अच्छी और बुरी, दोनों हो सकती है। एक ताजा आंकड़ा बताता है कि उच्च आय वाले देशों में 95 फीसदी आबादी इंटरनेट से जुड़ी है, तो निम्न आय वाले देशों में सिर्फ 26 प्रतिशत लोगों की इंटरनेट तक पहुंच है। भारत में वर्तमान में इंटरनेट की व्यापकता ने बच्चों के जीवन में अनेक संकट खड़े किये हैं। यूनिसेफ ने इस डिजिटल डिवाइड को पाटने और बच्चों तक नयी प्रौद्योगिकियों की सुरक्षित एवं समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए समावेशी प्रौद्योगिकी पहल की वकालत की है। बच्चे चूंकि हमारा भविष्य हैं, इसलिए बच्चों और उनके अधिकारों को सरकारी नीतियों-रणनीतियों के केंद्र में रखना समृद्ध और टिकाऊ भविष्य के निर्माण एवं संतुलित-आदर्श समाज-व्यवस्था के लिए आवश्यक है। अक्सर यह सवाल विमर्श में होता है कि धरती के प्रति गैर-जिम्मेदार व्यवहार के चलते हम कैसा देश आने वाली पीढ़ियों के लिये छोड़कर जाएंगे। आने वाले पच्चीस वर्षों में बच्चों पर लू का 8 गुणा, बाढ़ का 3 गुणा एवं जंगली आग का दोगुणा खतरा होगा। यही वजह है कि संयुक्त राष्ट्र बाल कोष यानी यूनिसेफ ने बच्चों के भविष्य की तस्वीर उकेरते हुए विभिन्न चुनौतियों के मुकाबले के अनुरूप नीति निर्माण की जरूरत बतायी है। यूनिसेफ ने सदी के पांचवें दशक तक की तीन महत्वपूर्ण वैश्विक प्रवृत्तियों का खाका खींचा है। ये घटक नौनिहालों के भविष्य के जीवन को नया स्वरूप देने में अहम भूमिका निभाएंगे।

वर्ष 2050 तक देश की आधी आबादी के शहरी क्षेत्रों में रहने का अनुमान है। दरअसल, मौजूदा दौर में जिस तेजी से गांवों से शहरों की ओर पलायन बढ़ रहा है, जाहिर है ऐसी स्थिति में पहले से आबादी के बोझ तले दबी नागरिक सेवाएं चरमरा जाएंगी। ऐसे में सत्ताधीशों के लिये जरूरी होगा कि जलवायु परिवर्तन के संकट के बीच बच्चों के अनुरूप शहरी नियोजन को अपनी प्राथमिकता बनाएं और बच्चों के अनुकूल और जलवायु परिवर्तन के लिहाज से जुझारु, सुरक्षित एवं निरापद शहरी नियोजन के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल और टिकाऊ शहरी ढांचे में निवेश को प्राथमिकता दी जाये। शहर बेहतर जीवन के लिए बेहतरीन अवसर और उम्मीद दे सकते हैं। वे वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 80 प्रतिशत से अधिक उत्पन्न करते हैं और उन्हें तेजी से विकास हासिल करने के लिए इंजन माना जाता है। वे विकास और नवाचार, विविधता और कनेक्टिविटी के दुनिया के सबसे मजबूत स्रोतों में से हैं और संभावित रूप से बच्चों को जीने, सीखने और आगे बढ़ने के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान कर सकते हैं।

बढ़ता शहरीकरण बड़ी असमानताओं को भी जन्म दे सकते हैं। आज शहरी क्षेत्रों में रहने वाले 4 बिलियन लोगों में से लगभग एक तिहाई बच्चे हैं। यह अनुमान है कि 2050 तक, दुनिया के लगभग 70 प्रतिशत बच्चे शहरी क्षेत्रों में रहेंगे, जिनमें से कई झुग्गी-झोपड़ियों में रहेंगे। इसलिये शहर स्कूलों और अस्पतालों जैसी बुनियादी सेवाओं तक बेहतर पहुंच प्रदान कर सकते हैं, भीड़भाड़ और उच्च प्रवेश लागत के कारण सबसे गरीब शहरी बच्चे उन तक पहुंचने में असमर्थ हो सकते हैं। अन्य चुनौतियाँ जो शहरी गरीबों को प्रभावित करती हैं, विशेष रूप से झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों को, उनमें भीड़भाड़ और अपर्याप्त सफाई व्यवस्थाएं शामिल हैं-जो बीमारियों के फैलने में सहायक होती हैं-किफायती और सुरक्षित आवास की कमी, परिवहन की खराब पहुंच और बाहरी वायु प्रदूषण में वृद्धि आदि हैं। उल्लेखनीय है कि उस समय देश जनसांख्यिकी बदलावों की चुनौती से जूझ रहा होगा। आकलन किया जा रहा है कि इस बदलाव के चलते ही वर्तमान की तुलना में बच्चों की संख्या में करीब दस करोड़ की कमी आएगी। वर्तमान में पूरी दुनिया में एक अरब बच्चे उच्च जोखिम वाले जलवायु खतरों का मुकाबला कर रहे हैं, तो अगर सरकारें अभी से नहीं चेती तो 2050 की स्थिति का सहज आकलन किया जा सकता है। मासूम चेहरों एवं चमकती आंखों का नया बचपन भारत के भाल पर उजागर एवं कायम करने के लिये सरकारों को गंभीर होना होगा। बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान आधुनिक मानवतावाद और पूंजीवाद से प्रभावित होकर प्रदर्शन पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। इससे परिवारों और बाल देखभाल प्रदाताओं पर अनावश्यक दबाव पड़ता है। वर्तमान में मौजूद रहने के बजाय, लोग भविष्य के बारे में सोचने में अधिक से अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं। और ज्यादातर मामलों में वे इस बारे में नहीं सोच रहे हैं कि व्यापक अर्थों में सफल जीवन कैसा हो सकता है, बल्कि इसके बजाय वे स्कूल और कार्यस्थल में सफलता के बारे में सोच रहे हैं। यह कुछ कौशलों पर बहुत अधिक जोर देता है, जबकि अन्य-जैसे रचनात्मकता, सामाजिक क्षमता, जीवनमूल्य और उत्साह-को कम महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वे अधिक उन्नत शैक्षणिक ट्रैक या अधिक प्रतिष्ठित करियर में चयन के लिए प्रासंगिक नहीं हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चों में कई प्रतिभाएँ अविकसित रह जाती हैं। अगर समाज को भविष्य की चुनौतियों का सामना करना है-चाहे वह भविष्य आखिरकार कैसा भी क्यों न हो, तो भविष्य के खतरों की आहट को सुनते हुए जागरूक होना होगा। साफ है, नीति के स्तर पर प्रदूषण एवं बदलते मौसम की मार के लिये काम करना होगा। कम से कम भविष्य या बच्चों के लिये तो ऐसा किया ही जाना चाहिए। निश्चित ही यूनिसेफ की हालिया रिपोर्ट बच्चों के भविष्य की चिंताओं पर मंथन करने तथा उसके अनुरूप नीति-नियंताओं से नीतियां बनाने का सबल आग्रह करती है। तेजी से डिजिटल होती दुनिया में डिजिटल विभाजन भी एक बड़ी चुनौती होगी। तब तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग चरम पर होगा। जाहिर है कृत्रिम बुद्धिमत्ता जहां तरक्की का मुख्य साधन होगी, वहीं इसकी विसंगतियों का प्रभाव रोजगार के अवसरों एवं सामाजिक-पारिवारिक संरचना पर भी पड़ेगा। जहां दुनिया के विकसित देशों में अधिकांश आबादी इंटरनेट से जुड़ने के कारण प्रगति की राह में सरपट दौड़ रही है, तो गरीब मुल्कों में यह प्रतिशत विकसित देशों के मुकाबले करीब एक चौथाई ही है। ऐसे में समतामूलक आदर्श समाज की स्थापना के लिये डिजिटल डिवाइड को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके मद्देनजर हमारी कोशिश हो कि आधुनिक प्रौद्योगिकी का स्वरूप समावेशी हो। ताकि आधुनिक तकनीक तक बच्चों की समान व सुरक्षित पहुंच हो सके। निर्विवाद रूप से बच्चे आने वाले कल के लिये देश का भविष्य निर्धारक होते हैं। ऐसे में हर लोक कल्याणकारी सरकार का नैतिक दायित्व है कि अपनी रीतियों-नीतियों में बच्चों के हितों व अधिकारों को प्राथमिकता दे। तभी हम उनके सुखद भविष्य की उम्मीद कर सकते हैं।

उदास लोगों का देश बनना भारत की एक त्रासदी

ललित गर्ग

भारत उदास, निराश एवं थके हुए लोगों का देश बनता जा रहा है। हम प्रसन्न समाजों की सूची में अव्वल नहीं आ पा रहे हैं। आज अक्सर लोग थके हुए, उदास, निराश नज़र आते हैं, बहुत से लोग हैं जो रोज़मर्रा के काम करने में ही थक जाते हैं। उनका कुछ करने का ही मन नहीं होता। छोटे-मोटे काम भी थकाऊ और उबाऊ लगते हैं। विडम्बना तो यह है कि लम्बे विश्राम एवं लम्बी छुट्टियों के बाद भी हम खुद को तरोताजा नहीं बना पा रहे हैं। भारत में ऐसे लोगों का प्रतिशत लगभग 48 तक पहुंच गया है, जो चिन्ता का बड़ा सबब है। ऐसे थके एवं निराश लोगों के बल पर हम कैसे विकसित भारत एवं नये भारत का सपना साकार कर पायेंगे? यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निर्माताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार थके हुए लोगों के देश के रूप में पहचाने जा रहे है। खुशहाल देशों की सूची में भी हम सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं।

हर साल जारी होने वाली वर्ल्ड हैपिनेस रिपोर्ट, जो संयुक्त राष्ट्र सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस नेटवर्क की प्रस्तुति है, बताती है कि कौन देश सबसे ज्यादा खुश और कौन से देश सबसे ज्यादा दुखी हैं? वैश्विक स्तर पर खुशी का स्तर तय करने के कई पैमाने है, जिनमें लोगों की आजादी, स्वास्थ्य, भ्रष्टाचार, आय जैसी बातें शामिल होती हैं। सबसे अधिक दुखी देशों की लिस्ट में पहला नाम अफगानिस्तान का आता है। इस लिस्ट में भारत की रैंकिंग भी बेहद निराश करने वाली है। भारत में उदास एवं निराश लोगों की स्थिति के कई कारण हो सकते हैं-जनसंख्या वृद्धि दर ज्यादा होना, कृषि पर ज्यादा निर्भरता, आर्थिक विकास की दर कम होना, बेरोज़गारी, अशिक्षा, आय में असमानता, भ्रष्टाचार, आंतरिक द्वेष, कमज़ोर आर्थिक नीतियां एवं जटिल प्रशासनिक प्रक्रिया। दु:ख जीवन के उतार-चढ़ाव का एक अभिन्न अंग है। जिस तरह इंसान ख़ुशी, निराशा, उदासी, गुस्सा, गर्व आदि भावनाओं को महसूस करता है, उसी तरह हर कोई समय-समय पर दु:ख महसूस करता है। दु:ख कभी-कभी इंसान को मोटीवेट करने में भी मदद कर सकता है, लेकिन यह जिजीविषा, खुशहाली, सक्रियता, जोश को भी कम करता है। दुनिया की खुशहाल देशों की सूची में भारत इस वर्ष 143 देशों में 126वें स्थान पर है। यह रैंक पिछले साल के मुकाबले बिल्कुल वही रही है। भारत के पड़ोसी देशों में चीन 60वें, नेपाल 93वें, पाकिस्तान 108वें, म्यांमार 118वें, श्रीलंका 128वें और बांग्लादेश 129वें स्थान पर है।

भारत दुनिया का सबसे उदास देश है। शोधों के निष्कर्ष बताते हैं कि जलवायु परिवर्तन एवं अत्यधिक गर्मी के कारण 2100 तक भारत में हर साल 15 लाख लोगों की मौत हो सकती है? इसी कारण उदास लोगों की संख्या भी बढ़ सकती है। 2018 की एक रिपोर्ट कहती है कि भारत सबसे अधिक अवसादग्रस्त देशों की सूची में सबसे ऊपर है। भले ही भारतीयों को स्वभाव से समायोजित और संतुष्ट लोगों के रूप में जाना जाता है, लेकिन यह पता चला है कि वे सबसे अधिक उदास भी हैं। एक तरफ हम खुद को किसी भी चीज़ में आसानी से समायोजित कर लेते हैं, चाहे वह कम पैसा हो, खराब सड़कें हों, बुनियादी ढाँचे की कमी हो या कुछ भी हो। नेशनल केयर ऑफ मेडिकल हेल्थ के

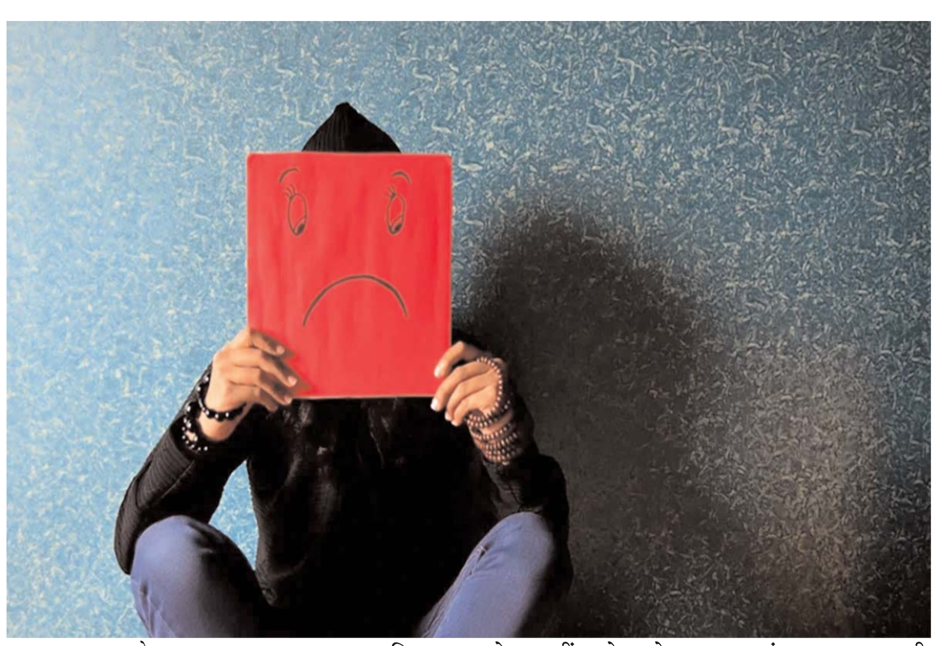

एक अध्ययन के अनुसार लगभग 6.5 प्रतिशत भारतीय गंभीर मानसिक स्थितियों से पीड़ित हैं, चाहे वे ग्रामीण हों या शहरी। सरकार जागरूकता कार्यक्रम चला रही है लेकिन मनोवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य डॉक्टरों की भी कमी है।

भारत के मानव-स्वभाव में उग्र हो रही उदासी एवं निराशा का बड़ा कारण प्रदूषित हवा एवं पर्यावरण है। शुद्ध वायु में ही जीवन है और उसी में जीवन की सकारात्मकता एवं जीवन-ऊर्जा समाहित है। यही हमारी अराजक जीवन शैली को संयमित कर सकती है। कुछ ऐसे रोग जो उपचार योग्य नहीं माने जाते, उन पर अंकुश लगा सकती है। व्यक्ति अपने घर में आहार-विहार को संतुलित करके भी उत्साही एवं प्रसन्न होने का प्रयास कर सकता है। हम सूरज के उगने से पहले उठें। धूप में न बैठने से हम विटामिन डी की समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं, जिससे शरीर में उदासी एवं निराशा बढ़ जाती हैं। आमतौर पर विदेशों में लोग नवंबर से जनवरी तक सूर्य स्नान लेते हैं जिससे लोगों को विटामिन-डी मिल जाता है। आज आम लोग शारीरिक श्रम नहीं करते। खान-पान की चीजों में भारी मिलावट है। बाजार की शक्तियां कई तरह के भ्रम फैलाती हैं। पारिवारिक जीवन अनेक दबावों से घिरा है, कॉरपोरेट संस्कृति में रिश्ते, स्वास्थ्य एवं खुशहाली बहुत पीछे छूट रही है। वास्तव में अधिकांश आधुनिक रोग काम न करने की बीमारी है। हम लोग दिमाग को थका रहे हैं, शरीर को नहीं थका रहे हैं। इसी वजह से शरीर को?भुगतना पड़ रहा है। आदमी पैदल नहीं चल रहा है। स्वस्थ रहने के लिये जरूरी है हम आहार सही ढंग से लें। दरअसल हमारा आहार दवा है। देर रात भोजन करना, देर रात तक जगना एवं सुबह देर से उठना शरीर के साथ अत्याचार करने जैसा है। इन्हीं जटिल से जटिलतर होती स्थितियों ने हमें उदासी दी है। वैसे उदासी, निराशा, थकावट, दुख या खुशी एक ऐसी अवस्था है, जिस पर किसी सर्वे के जरिये एकमत नहीं हुआ जा सकता। फिर भी, ऐसी सूचियों से सकारात्मक प्रेरणा लेते हुए प्रसन्न, उत्साही, सक्रिय समाज की संरचना के लिये तमाम तरह के प्रयास करने में ही भलाई है।

हमारा शीर्ष नेतृत्व आजादी के बाद से ही निरन्तर आदर्शवाद और अच्छाई का झूठ रचते हुए सच्चे आदर्शवाद के प्रकट होने की असंभव कामना करता रहा है, इसी से जीवन की समस्याएं सघन होती गयी है, इसी ने उदासी को बढ़ाया है, नकारात्मकता का व्यूह मजबूत होता गया है, खुशी, उत्साही, जोशीला एवं प्रसन्न जीवन का लक्ष्य अधूरा ही रहा है, इनसे बाहर निकलना असंभव-सा होता जा रहा है। दूषित और दमघोंटू वातावरण में आदमी अपने आपको टूटा-टूटा सा अनुभव कर रहा है। आर्थिक असंतुलन, बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, बिगड़ी कानून व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार उसकी धमनियों में कुत्सित विचारों का रक्त संचरित कर रहा है। ऐसे जटिल हालातों में इंसान कैसे खुशहाल, जोशीला एवं सकारात्मक जीवन जी सकता है?

सड़क हादसे में 3 युवकों की मौत के बाद हंगामा, महासमुंद में लोगों ने नेशनल-हाईवे जाम किया, तीनों के शव रखकर मुआवजे की मांग

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में बुधवार रात सड़क हादसे में 3 युवकों की मौत हो गई। नेशनल हाईवे 53 पर छुईपाली टोल प्लाजा के पास एक पिकअप ने बाइक सवारों को टक्कर मार दी। हादसे के बाद मृतकों के परिजन और सैकड़ों ग्रामीणों ने शवों को सड़क पर रख चक्काजाम कर दिया।

टोल प्लाजा पर शव रखकर प्रदर्शन करने के चलते वाहनों की लंबी लाइन लग गई है। वहीं परिजन शवों को रखकर मुआवजे की मांग कर रहे हैं। पुलिस ग्रामीणों और परिजनों को समझाने की कोशिश में लगी हुई है। साथ ही टोल प्लाजा प्रबंधन भी बात कर रहा है।

दरअसल, बताया जाता है कि पिकअप वाहन को BSPCL ने किराए पर हायर किया हुआ है। घटना के दौरान पिकअप में नेशनल हाईवे रिपेयरिंग के दौरान लगाए जाने वाले स्टॉपर लोड थे। इसी के चलते लोग टोल प्लाजा प्रबंधन से मुआवजा मांग रहे हैं।

सड़क से झाड़ियों में जाकर गिरे तीनों युवक: मामला बसना थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक छुईपाली टोल प्लाजा के पास रात करीब साढ़े आठ बजे गिधली के रहने वाले दुखनासन बारीक, प्रशांत बारीक और बानीपाली का रहना वाला मुकेश साहू एक बाइक पर सवार होकर सरायपाली से बसना आ रहे थे। इस दौरान एक पिकअप वाहन ने उनकी बाइक को ठोकर मार दी। ये ठोकर इतनी जोरदार थी कि तीनों युवक बाइक सहित सड़क से दूर किनारे झाड़ियों में जा गिरे। तीनों को गंभीर हालत में बसना अस्पताल लाया गया। तीनों के सिर, पैर के अलावा अंदरूनी चोट आई थी। इलाज के दौरान तीनों ने दम तोड़ दिया।

दोपहर 12 बजे से धरने पर बैठे परिजन, अफसरों को भगाया: तीनों की मौत से आक्रोशित परिजन और सैकड़ों ग्रामीण गुरुवार दोपहर 12 बजे से शव लेकर धरने पर बैठे हैं। ग्रामीण 20 से 25 लाख मुआवजे की मांग कर रहे हैं। मौके पर पुलिस बल और तहसीलदार मौजूद हैं। इस बीच जब अफसरों ने मृतकों के परिजनों को 25-25 हजार देने की बात कही तो ग्रामीण भड़क उठे और मौके से अफसरों को भगा दिया।

AIIMS में लड़के-लड़कियों को कमरे में बंदकर रैगिंग

भद्दी गालियां दी, बेहोश होकर गिरे स्टूडेंट्स; गार्ड्स के सामने ठिठुरते ठंड में किया खड़ा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायपुर के पंडित जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के बाद अब AIIMS में जूनियर स्टूडेंट्स से रैगिंग की गई है। आरोप हैं कि, रात 12 बजे से MBBS-2023 बैच के जूनियर स्टूडेंट्स (लड़के-लड़कियों) को बंद कमरे में बुलाया गया। अंदर से खिड़की दरवाजे, पंखे बंद कर दिए गए। दम घुटने से कई लड़कियां बेसुध होकर जमीन पर गिर गईं। इस दौरान सीनियर्स उन्हें गालियां देते रहे।

इसके बाद भी मन नहीं भरा तो आरोपी सीनियर्स स्टूडेंट रात 2 बजे जूनियर्स को बास्केट ग्राउंड में लेकर गए। उन्हें कड़ाके की ठंड में टी-शर्ट में ही खड़ा कराया। वहां मौजूद एम्स के प्राइवेट सिक्योरिटी गॉर्डस भी यह सब देख रहे थे। करीब साढ़े 3 बजे रात को स्टूडेंट्स को वापस जाने दिया गया।

सुप्रीम कोर्ट की वकील के पास आया मेल: इसका खुलासा तब हुआ जब रैगिंग से तंग आकर एक पीड़ित स्टूडेंट ने सुप्रीम कोर्ट की वकील और SAVE NGO (सोसाइटी अगेंस्ट वॉयलेंस इन एजुकेशन) की लीगल हेड मीरा कौर पटेल को ई-मेल पर शिकायत भेजी। मीरा ने वीडियो के जरिए बताया कि, उनके पास किसी अज्ञात स्टूडेंट का ई-मेल आया। जिसमें बताया गया कि, 15-16 नवंबर 2024 की रात AIIMS में सामूहिक रैगिंग की गई है।

गार्ड्स के सामने ठिठुरते ठंड में खड़ा किया: वकील मीरा ने बताया कि, रात करीब 2 बजे सभी स्टूडेंट को बास्केटबॉल ग्राउंड पर लाया गया, कड़ाके की ठंड में उन्हें टी-शर्ट पहनाकर खड़ा किया गया। ये फेस्ट की टी शर्ट थी। इस दौरान सभी के फोन टेबल पर रखवा दिए गए थे। उसके बाद गालियां और धमकियां दी गई। इस दौरान एम्स की महिला और पुरुष सिक्योरिटी गार्ड्स चुपचाप खड़े होकर सब कुछ देखते रहे, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया।

चेहरे के बाल को ट्रिमर से हटाने की धमकी: बताया जा रहा है कि, ट्रिमर से जूनियर स्टूडेंट को चेहरे के बाल हटाने की धमकी दी है। उन्हें शेविंग कराने के लिए कहा गया। रात करीब 3.30 तक यह सब चलता रहा। उसके बाद उन्हें वापस जाने के अनुमति दी गई। ई-मेल के मुताबिक, पीड़ित स्टूडेंट्स ने बताया कि, इस घटना के बाद कई लोग बुरी तरह मानसिक रूप से प्रताड़ित हैं। इस ई-मेल में कुछ स्टूडेंट्स को जिम्मेदार भी ठहराया गया है।

वकील ने कहा-रायपुर AIIMS प्रबंधन मामले में गंभीर नहीं: वकील मीरा ने कहा कि, रैगिंग का अपराध गंभीर मामलों की श्रेणी में आता है। रायपुर एम्स में जो घटित हुआ उसमें कई स्टूडेंट की जान को भी खतरा था। जो बीएनएस कानूनों के अपराधों में आता है। इस ईमेल को देखकर लग रहा है कि एम्स प्रबंधन ने मामले को बिल्कुल भी गंभीरता से नहीं लिया है। इससे और ज्यादा चांसेस है कि रैगिंग बढ़ेगी। पीड़ित ने एंटी रैगिंग हेल्पलाइन में भी शिकायत की है।

24 घंटे के भीतर करनी होती है FIR

मीरा ने कहा कि, रैगिंग एक संज्ञेय अपराध है। जिसमें वारंट के बिना पुलिस गिरफ्तारी कर सकती हैं। इसके अलावा इस मामले में एम्स प्रबंधन को 24 घंटे के भीतर करानी चाहिए थी। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ। हमें जानकारी है कि एम्स रायपुर प्रबंधन ने ऐसा नहीं किया है। जो यूजीसी के नियमों के खिलाफ है। मीरा ने जानकारी देते हुए बताया कि अगर AIIMS प्रबंधन नियम मुताबिक, ऐसा नहीं करते तो एम्स के डायरेक्टर के खिलाफ भी बीएनएस की 211 और 239 के अंतर्गत शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है।

स्टूडेंट्स ने किसी भी घटना से किया इनकार- एम्स: रैगिंग मामले में एम्स के असिस्टेंट PRO डॉ लक्ष्मीकांत चौधरी ने कहा कि MBBS 2023 के स्टूडेंट की तरफ से शिकायत की खबरें चल रही हैं। लेकिन जब स्टूडेंट से पूछताछ की गई तो उन्होंने ऐसी कोई भी शिकायत या घटना से इनकार किया है। फिलहाल प्रबंधन की तरफ से इस मामले में जांच जारी है।

14 से 17 नवंबर तक चला ओरियाना फेस्ट:

बता दें कि, जिस रात यह रैगिंग हुई। उस समय रायपुर एम्स में ओरियाना फेस्ट चल रहा था। कार्यक्रम 14 से लेकर 17 नवंबर तक चला। इस दौरान डीजे, लाइव कॉन्सर्ट समेत कई अलग-अलग तरह के प्रोग्राम हुए। इन कार्यक्रमों के आयोजन के दौरान ढ्ढढ्ढरूस्न के भीतर बाहर के कई स्टूडेंट भी पार्टिसिपेट करने पहुंचे थे।

सुनील सोनी ने जन्मदिन पर MLA पद की ली शपथ

अब मंत्री पद मिलने की अटकलें; अमर,अजय, मूणत भी रेस में; जानिए ताकत और कमजोरी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर दक्षिण विधानसभा में जीत हासिल करने के बाद भाजपा नेता सुनील सोनी ने गुरुवार को विधायक पद की शपथ ली। विधानसभा कार्यालय में सुनील सोनी ने अपने जन्मदिन के दिन शपथ ली। समर्थक ने भी उन्हें डबल बधाई दी। वहीं, सुनील को अब मंत्री पद मिलने की भी अटकलें चल रही हैं।

दरअसल, 23 नवंबर को रायपुर दक्षिण उपचुनाव के नतीजे आए थे। 46 हजार से ज्यादा वोटों से जीते सुनील सोनी ने यह चुनाव बृजमोहन अग्रवाल के सांसद बन जाने की वजह से लड़ा था। दिलचस्प है कि जब पिछले लोकसभा चुनाव में सुनील सोनी रायपुर के सांसद थे। तब बृजमोहन दक्षिण से विधायक थे। अब बृजमोहन रायपुर के सांसद हैं, सोनी दक्षिण से विधायक हैं।

सुनील सोनी को अब मंत्री पद मिलने की अटकलें हैं। इसके पीछे सियासी वजह यह मानी जा रही हैं कि सुनील सोनी की जीत को पूरी भाजपा विष्णुदेव सरकार के 1 साल के कार्यकाल का रिपोर्ट-कार्ड मान रही है। साय कैबिनेट में बृजमोहन के बाद खाली मंत्री पद पर सुनील सोनी को जगह दिए जाने की चर्चाएं हैं।

साय कैबिनेट में 2 मंत्री पद खाली हैं। विस्तार जनवरी या फरवरी के बाद हो सकता है। मंत्री पद की रेस में लोकसभा चुनाव 2024 के तत्काल बाद से कुछ पुराने नामों के शामिल होने की बातें सामने आती रही हैं।

इनमें पूर्व मंत्री अमर अग्रवाल, अजय चंद्राकर, राजेश मूणत के नाम हैं। वहीं, केंद्रीय मंत्री रह चुकीं रेणुका सिंह का नाम भी चर्चा में रहा है। इनके अलावा दुर्ग से गजेंद्र यादव और कोंडागांव से लता उसेंडी को साय कैबिनेट में शामिल किया जा सकता है।

कांग्रेस नेता हरितवाल और पूर्व मेयर में धक्का-मुक्की और गाली-गलौज

बिलासपुर जिला अध्यक्ष ने पहले बताया घर का मामला; फिर राजेश पांडेय को दिया नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर कांग्रेस भवन में बुधवार को पीसीसी चीफ दीपक बैज की मौजूदगी में कांग्रेस नेता आपस में भिड़ गए। इस दौरान प्रदेश महामंत्री सुबोध हरितवाल और पूर्व महापौर राजेश पांडेय ने जमकर गाली-गलौज की। इसका वीडियो सामने के बाद जिला कांग्रेस कमेटी ने राजेश पांडेय को शोकॉज नोटिस जारी किया है। सुबोध हरितवाल और राजेश पांडेय के बीच धक्कामुक्की और विवाद बढ़ता देखकर मौके पर मौजूद कांग्रेस नेताओं ने बीच-बचाव किया, लेकिन उसके बाद भी दोनों बवाल करते रहे। मामले में बिलासपुर कांग्रेस जिला अध्यक्ष विजय पांडेय ने कहा था कि कांग्रेस जिंदा लोगों की पार्टी है, इसलिए गहमा-गहमी होती रहती है। मैं इसे विवाद नहीं मानता, यह एक स्वस्थ चर्चा है। यह परिवार का अंदरूनी मामला है, जिसे सुलझा लिया गया है।

कांग्रेस की संस्कृति में झगड़ा-फसाद- बीजेपी: भाजपा जिलाध्यक्ष रामदेव कुमावत ने कहा कि कांग्रेस की संस्कृति में ही झगड़ा और फसाद है। कांग्रेस के सीनियर नेताओं की पूछ परख नहीं हो रही है और उनकी बातें तक नहीं सुनी जा रही है। जिसके चलते लगातार सीनियर लीडर पार्टी छोड़ कर जा रहे हैं। कांग्रेस भवन में हुए विवाद से एक बार फिर स्पष्ट हो गया है कि सीनियर नेताओं को अपमानित किया जा रहा है और उनको तवज्जो नहीं दी जा रही है। दुर्भाग्य है कि इस बार मामला गाली-गलौज तक पहुंच गया।

जानिए क्यों शुरू हुआ विवाद : पीसीसी चीफ दीपक बैज नगरीय निकाय चुनाव की तैयारी को लेकर संगठन के पदाधिकारियों के साथ चर्चा कर रहे थे। इस दौरान पूर्व महापौर राजेश पांडेय ने कहा कि बिलासपुर में भाजपा सहित हिंदूवादी नेता कांग्रेस विधायक को लगातार घेरने की कोशिश कर रहे हैं।

दीपक बैज ने दोनों नेताओं को कराया शांत: राजेश पांडेय ने कहा कि बिना मुद्दे के कांग्रेस नेता के खिलाफ बयानबाजी भी कर रहे हैं, लेकिन संगठन के लोग बयानबाजी पर पक्ष तक नहीं लेते। इसी बात को लेकर दोनों नेताओं में बहस और धक्का-मुक्की हुई। दीपक बैज और विधायक अटल श्रीवास्तव ने दोनों को शांत कराया।

10 महीने में केवल अपराध बढ़े- बैज: वहीं विवाद से पहले बैठक में दीपक बैज ने कहा कि निकाय चुनाव के लिए प्रत्येक वार्डों में सिंगल नाम का पैनल बनाकर भेजें। प्रत्याशी का नाम बूथ लेवल से आए तो ज्यादा अच्छा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की नाकामियों को लेकर जनता के बीच जाइए, क्योंकि इन 10 महीने में केवल अपराध बढ़े हैं। भाजपा ने किसानों के साथ बड़ा छलावा किया है। धोखा दे रही है।

सिर्फ 15 क्विंटल धान खरीद रही सरकार: बैज ने कहा कि केवल 15 क्विंटल धान की खरीदी हो रही है। लगभग 2300 रुपए भुगतान किया जा रहा है। अपने वादे को भाजपा सरकार भूल गई है। किसान असमंजस की स्थिति में हैं। मजबूरन साहूकार को धान बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं। किसान उधारी लेकर अपना खर्च चलाता है। अब साहूकार पैसा के लिए परेशान करने लग गए हैं।

कांग्रेस जिला कमेटी करेगी खरीदी केंद्रों का निरीक्षण: उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने जिला स्तर पर जांच कमेटी बना दी है, जो खरीदी केंद्रों में जाकर निरीक्षण करेगी। प्रदेश कांग्रेस को रिपोर्ट देंगे। भाजपा ने 2014 में भी बोनस देने की बात कही और उसे 2023 में दिया। ऐसा ही कुछ इस बार भी लग रहा है। किसान हताश और मायूस हैं।

बैठक में ये लोग रहे मौजूद: बैठक में नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायत सहित जिला पंचायत, जनपद पंचायत, नगर पंचायत के कार्यकर्ता, तखतपुर, सकरी, तिफरा,बिल्हा बोदरी, सीपत, बेलतरा, मस्तूरी, बेलगहना, कोटा, रतनपुर और सिरगिट्टी समेत सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

क्लास-रूम में सोने वाली टीचर से 25 हजार की डिमांड, बोला-पैसे नहीं दिए तो होंगी सस्पेंड

छत्तीसगढ़ में मंत्रालय का अफसर बनकर ठगों ने किया कॉल

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के सरकारी स्कूल के क्लास रूम में सोने वाली टीचर को धमकी भरे कॉल किए जा रहे हैं। फोन करने वाला खुद को मंत्रालय का अफसर बताकर 25 हजार रुपए की डिमांड कर रहा है, पैसे नहीं देने पर सस्पेंड करने की चेतावनी दी है। अब स्कूल की हेडमास्टर ने सीपत थाने में शिकायत की है। दरअसल, एक सप्ताह पहले मस्तूरी ब्लॉक के बरेली के प्राइमरी स्कूल की टीचर रामेश्वरी कैवर्त्य का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। जिसमें वो क्लास रूम में सो रही थी। टीचर वीडियो बनाने वाले को कह रही थी कि, मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। सुबह से तबीयत ठीक नहीं है, पता नहीं मौसम की वजह से हाथ-पैर में दर्द हो रहा है। टीचर युवक को वीडियो बनाने से भी रोकती दिख रही है।

शिक्षा विभाग के अफसर कर रहे जांच: वहीं, क्लास रूम में टीचर के सोते हुए वीडियो वायरल होने के बाद जिला शिक्षा अधिकारी ने जांच के आदेश दिए हैं। वहीं जांच अधिकारी को टीचर ने अपना मेडिकल रिपोर्ट और बयान भी दिया है। हेडमास्टर लक्ष्मी माल्या ने भी कहा है कि, टीचर की तबीयत खराब थी। लंच के दौरान आराम कर रही थीं।

ठगों ने मंत्रालय के अफसर बताकर मांगे 25 हजार: स्कूल की हेडमास्टर लक्ष्मी माल्या ने सीपत थाने में वीडियो रिकार्डिंग दी है। उन्होंने बताया कि, टीचर के सोने का वीडियो वायरल होने के बाद अनजान नंबर से उन्हें और टीचर को लगातार कॉल किया जा रहा है। कॉल करने वाला खुद को मंत्रालय का अधिकारी अतुल शर्मा बता रहा है। वो हेडमास्टर और टीचर को सस्पेंड और बर्खास्त करने की धमकी देकर 25 हजार रुपए की डिमांड कर रहा है। हेडमास्टर ने इस मामले की जांच करने और धमकी देकर पैसों की मांग करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

पुलिस बोली- नए-नए तरीके अपना रहे साइबर फ्रॉड: एडिशनल एसपी सिटी राजेंद्र जायसवाल का कहना है कि, साइबर फ्रॉड करने वाले गिरोह के लोग कई तरीके से ठगी करते हैं। शुरुआती जांच में पता चला है कि, सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद साइबर ठगों ने हेडमास्टर और टीचर को कॉल किया होगा। जिन नंबर से कॉल किया गया है, उसकी तकनीकी जांच की जा रही है। जांच के बाद उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने लोगों से अपील की है कि, इस तरह से अनजान नंबर से आने वाले कॉल को इग्नोर करें और सावधानी बरतें। पैसों की मांग करने पर किसी तरह के लेनदेन करने से बचे। उनके झांसे में आकर आप ठगी का शिकार हो सकते हैं।

रायपुर में फूल चौक चौपाटी हटाई गई, 15 दुकानों पर चला बुलडोजर

30 साल से दुकान लगा रहे व्यापारी बोले-हर्जाना दे सरकार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर शहर में फूल चौक चौपाटी को गुरुवार को हटाया गया। नगर निगम ने 15 दुकानों पर बुजडोजर चलाकर इन्हें तोड़ दिया। सुबह-सुबह निगम के जोन 2, 4 और जोन 7 के अफसर-कर्मचारी फूल चौक पहुंचे थे।

यहां अचानक निगम के अमले ने कार्रवाई शुरू कर दी। दुकानदारों को खबर लगी तो वो भी भागकर यहां पहुंचे। व्यापारियों और निगम कर्मियों में कहा-सुनी भी हुई लेकिन मगर कार्रवाई नहीं रुकी।

फूल चौक की ह्रष्ठ बिल्डिंग कैंपस के भीतर पार्किंग के पास चायनीस फूड, चाट-गोलगप्पे की दुकानें लगा करती थीं। ये करीब 30 साल पुराना बाजार है। रायपुर शहर के हर दिन लगभग 1000 से ज्यादा लोग यहां चौपाटी आया करते थे। दुकानदारों को कोई वैकल्पिक जगह भी नहीं दी गई है।

छत्तीसगढ़ में कड़ाके की ठंड, सुबह 9 बजे से लगेंगे स्कूल

बलरामपुर, मनेंद्रगढ़ में दो शिफ्ट में लगेगी पहली से 12वीं तक की क्लास; आदेश जारी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। सरगुजा संभाग में शीतलहर के कारण बलरामपुर और मनेंद्रगढ़ में स्कूलों के समय में बदलाव किया गया है। दोनों जिले में पहली से 12वीं तक की क्लास अब दो शिफ्ट में लगेगी। मनेन्द्रगढ़ कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देश पर 27 नवंबर से जिले के सभी स्कूल दो पालियों में संचालित किए जाएंगे। पहली पाली सुबह 9 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक होगी। दूसरी पाली सोमवार से शुक्रवार तक दोपहर 12.45 बजे से शाम 4.15 बजे तक चलेगी।

इसके अलावा बलरामपुर जिले में भी स्कूलों के संचालन का समय बदल गया है। पहली पाली सुबह 9 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक होगी। दूसरी पाली सोमवार से शुक्रवार तक दोपहर 12.45 बजे से शाम 4.15 बजे तक होगी। वहीं एक शिफ्ट में लगने वाले स्कूल का समय सुबह 10 बजे से दोपहर 4 बजे तक किया गया है।

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक उत्तर से लगातार आ रही ड्राई एयर के कारण सरगुजा संभाग में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। अगले 2 दिनों में छत्तीसगढ़ में न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। उसके बाद रात का पारा 2-3एष्ट तक बढ़ सकता है।

मोस्ट वांटेड आतंकी को रवांडा से लाया गया भारत, लश्कर ए तैयबा से था संबंध

नईदिल्ली । केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने बेंगलुरु स्थित आतंकवादी मॉड्यूल को धन और हथियार और गोला-बारूद मुहैया कराने के आरोपी लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े एक आतंकवादी को रवांडा से प्रत्यर्पित किया है। अधिकारियों के अनुसार, सलमान रहमान खान का प्रत्यर्पण किगाली में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) और इंटरपोल के राष्ट्रीय केंद्रीय ब्यूरो के सहयोग से सीबीआई के ग्लोबल ऑपरेशंस सेंटर द्वारा किए गए एक बेहद गोपनीय ऑपरेशन का हिस्सा था। खान पर आपराधिक साजिश में शामिल होने, आतंकवादी संगठन में सदस्यता लेने और पाकिस्तान स्थित लश्कर-ए-तैयबा को सामग्री सहायता प्रदान करने का आरोप है। एनआईए ने 2023 में उसके खिलाफ शस्त्र अधिनियम, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम और आतंकवाद से संबंधित विभिन्न प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया। उस पर बेंगलुरु में आतंकवादी गतिविधियों के लिए हथियार, गोला-बारूद और विस्फोटकों की आपूर्ति में मदद करने का आरोप है। यह मामला बेंगलुरु सिटी पुलिस द्वारा परप्पाना अग्रहारा सेंट्रल जेल में एक बड़ी हथियार जब्ती के बाद शुरू हुआ। पिछले साल एक छापेमारी के दौरान अधिकारियों ने सात पिस्तौल, चार हथगोले, एक मैगजीन, 45 जिंदा राउंड और चार वॉकी-टॉकी बरामद किए थे। जांच से पता चला कि हथियार एक बड़े नेटवर्क का हिस्सा थे जिसका उद्देश्य कट्टरपंथी विचारधारा फैलाना और लश्कर-ए-तैयबा के अभियानों का समर्थन करना था। एनआईए ने 25 अक्टूबर, 2023 को मामले को अपने हाथ में ले लिया और खान की पहचान बेंगलुरु स्थित आतंकी मॉड्यूल को हथियार, गोला-बारूद और धन के परिवहन की सुविधा के लिए जिम्मेदार एक महत्वपूर्ण संचालक के रूप में की।

दिल्ली के प्रशांत विहार में पीवीआर के पास धमाका

नईदिल्ली । दिल्ली के प्रशांत विहार में पीवीआर के पास धमाका हुआ है। पुलिस के अनुसार, गुरुवार को दिल्ली के प्रशांत विहार में एक पीवीआर मल्टीप्लेक्स के पास एक जोरदार धमाका हुआ। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और बचाव अभियान शुरू किया। पुलिस ने आगे कहा कि वह घटनास्थल पर विस्फोट के बारे में प्राप्त कॉल की पुष्टि कर रही है। पुलिस की एक टीम विस्फोट के कारणों की भी जांच कर रही है। एएनआई ने दिल्ली फायर सर्विस के हवाले से बताया, आज सुबह 11.48 बजे प्रशांत विहार इलाके से विस्फोट के बारे में कॉल मिली। दमकल की गाड़ियां मौके पर पहुंच गई हैं। प्रशांत विहार में पीवीआर सिनेमा के पास हुए विस्फोट से निवासियों और राहगीरों में दहशत फैल गई। घटना की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ियां समेत आपातकालीन सेवाएं मौके पर पहुंच गईं। अधिकारियों और पुलिस ने अभी तक विस्फोट के कारणों की पुष्टि नहीं की है और अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

भारतीय टेक्नोलॉजी और जर्मन एक्सपर्ट्स के समन्वय से होगा औद्योगिक विकास-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को जर्मनी दौरे पर बवेरिया राज्य के चांसलरी प्रमुख और संघीय एवं यूरोपीय मामलों के साथ मीडिया विभाग के मंत्री डॉ. फ्लोरियन हैरमेन से मुलाकात की। इस मुलाकात में राज्य स्तर पर सहयोग के विभिन्न अवसरों पर चर्चा की गई। चर्चा में मुख्यमंत्री डॉ. यादव एवं डॉ. हैरमेन ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत और जर्मनी के बीच मजबूत होते रिश्तों को आगे बढ़ाने की दिशा में राज्य स्तर पर भी साझेदारी बढ़ाने पर रजामंदी दिखाई। दोनों नेताओं ने तकनीकी नवाचार, सुपरकंप्यूटिंग, ऑटोमोटिव सेक्टर, एरोनॉटिक्स और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में संभावित सहयोग के पहलुओं पर विचार-विमर्श किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जर्मन प्रतिनिधिमंडल के टाइम मैनेजमेंट से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा, जो समय को जीतता है, वह दुनिया को जीत

सकता है। उन्होंने जर्मनी की आर्थिक सुदृढ़ता और परिवर्तन को प्रेरणादायक बताते हुए इसे राष्ट्रीय विकास और रणनीतिक प्रगति का एक आदर्श मॉडल निरूपित किया। दोनों पक्षों ने इस मुलाकात को मध्यप्रदेश और बवेरिया के बीच दीर्घकालिक और आपसी लाभकारी संबंधों का शुभारंभ बताया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश और बवेरिया के बीच जलवायु नीति से जुड़े संकटों का समाधान, तकनीकी नवाचारों, उच्च शिक्षा, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और मध्यप्रदेश के नागरिकों के लिए रोज़गार के अवसर सृजित करने की दिशा में मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश के मंडीदीप और पीथमपुर में पहले से मौजूद जर्मन निवेशों के सुगम समन्वय के उद्देश्य से मध्यप्रदेश में एक विशेष राज्य सरकारी संपर्क कार्यालय स्थापित करने की योजना पर भी चर्चा की।

अडानी और संभल मुद्दे पर गतिरोध बरकरार, वक्फ बिल पर बढ़ा जेपीसी का कार्यकाल

नईदिल्ली। संसद का शीतकालीन सत्र चौथे दिन में प्रवेश कर गया और गुरुवार को लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही फिर से शुरू हुई। हालांकि, स्थितियां पहले की ही तरह रही। विपक्ष का हंगामा जारी रहा। विपक्ष के हंगामे के बीच संसद शुक्रवार तक के लिए स्थगित कर दी गई। बार-बार हंगामे के कारण चौथे दिन भी काम नहीं हो पाया। संसद के शुरुआती दिन काफी हद तक अनुत्पादक रहे क्योंकि विपक्ष के हंगामे के कारण दोनों सदनों को स्थगित कर दिया गया। वहीं, खबर है कि विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर बांग्लादेश की स्थिति पर लोकसभा और राज्यसभा दोनों में कल बयान दे सकते हैं। केरल के वायनाड से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुईं कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बृहस्पतिवार को निचले सदन की सदस्यता की शपथ ली। शपथ के बाद उन्होंने कहा कि जनता के जरूरी मुद्दों को उठाना, देश और पार्टी के लिए काम करना ही उनकी प्राथमिकता रहेगी तथा वह संविधान के उसूलों के लिए लड़ाई लड़ेंगी। प्रियंका ने हिंदी में शपथ ली और इस दौरान उन्होंने संविधान की एक प्रति अपने हाथ में ले रखी थी। महाराष्ट्र के नांदेड़ से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए कांग्रेस नेता रवींद्र बसंतराव चव्हाण ने भी सदन की सदस्यता की शपथ ली। लोकसभा में बृहस्पतिवार को कांग्रेस, समाजवादी पार्टी (सपा) समेत विपक्षी दलों के सदस्यों ने अदाणी समूह से जुड़े मामले तथा उत्तर प्रदेश के संभल में हिंसा के मुद्दे को लेकर हंगामा किया,

हमने कभी दिल्ली जाकर भीख नहीं मांगी: राउत

मुंबई । शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने गुरुवार को पुष्टि की कि महाराष्ट्र में हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति की शानदार जीत के बाद विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) में कोई दरार नहीं है। उन्होंने अफवाहों को निराधार बताया और पुष्टि की कि उद्धव सेना एमवीए नहीं छोड़ रही है। 23 नवंबर को महायुति ने राज्य चुनाव में 288 विधानसभा सीटों में से 230 सीटें जीतकर परचम लहराया। भाजपा 132 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जो अब तक की उसकी सबसे बड़ी संख्या है, जबकि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजीत पवार की राकांपा को क्रमश: 57 और 41 सीटें मिलीं। आज एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, राउत ने कहा कि इंडिया ब्लॉक के नेतृत्व वाला गठबंधन 2024 के लोकसभा चुनावों में एक साथ लड़ने में सफल रहा। इसके साथ ही राउत ने महायुति पर निशाना साधा।

दिल्ली की कानून व्यवस्था को लेकर केंद्र पर बरसे केजरीवाल

नईदिल्ली । आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को राष्ट्रीय राजधानी में बिगड़ती कानून व्यवस्था को लेकर केंद्र की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर सवाल उठाया।

पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दिल्ली की महिलाओं की सुरक्षा करने में विफल रहे हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली में कानून व्यवस्था की स्थिति खराब होती जा रही है। पिछले 1-1.5 साल से दिल्ली में अपराध बढ़ रहे हैं। व्यापारियों को रंगदारी के लिए फोन आ रहे हैं, हत्या और छेड़छाड़ के मामले बढ़ रहे हैं। आप नेता ने कहा कि कई सालों के बाद दिल्ली में गैंगवार देखने को मिल रही है। आज लोग कहते हैं कि दिल्ली दुनिया की सबसे असुरक्षित राजधानी है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि दिल्ली में मर्डर, रंगदारी, लूट और लगातार बढ़ते क्राइम से जनता पहले से ही डर के साये में है और आज एक धमाका भी हो गया। उन्होंने कहा कि दिल्ली में आराम से और सुरक्षित जीने का सबको अधिकार है। गृहमंत्री अमित शाह जी, कृपया नींद से जागिए और अपनी जिम्मेदारी निभाइए। उन्होंने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह के घर से चंद किलोमीटर दूर महिलाओं के साथ ख़तरनाक घटनायें हो रही हैं लेकिन अमित शाह जी कुछ नहीं कर रहे हैं।

राजस्थान में आयकर विभाग की बड़ी कार्रवाई

उदयपुर। राजस्थान सहित तीन राज्यों में आज सुबह इनकम टैक्स विभाग ने ट्रांसपोर्ट कंपनियों के 23 ठिकानों पर बड़ी कार्रवाई करते हुए छापेमारी शुरू की। यह कार्रवाई जयपुर, उदयपुर, बांसवाड़ा, गुजरात और मुंबई में की जा रही है।जयपुर के विश्वकर्मा क्षेत्र और उदयपुर की प्रसिद्ध ट्रांसपोर्ट कंपनी गोल्डन ट्रांसपोर्ट एंड लॉजिस्टिक पर आयकर विभाग की टीमें सुबह 5.30 बजे से दस्तावेज़ों की जांच में जुटी हैं। बताया जा रहा है कि यह फर्म टीकम सिंह राव की है, और इस पर सामान (गुड्स) के अवैध परिवहन का आरोप है।

आयकर विभाग को मुखबिर से मिली शिकायत के आधार पर पूरी जांच कर सत्यापन किया गया। इसके बाद आईटी की अन्वेषण शाखा ने यह रेड शुरू की।

तीन राज्यों में छापेमारी में राजस्थान के जयपुर में एक, उदयपुर में 16, बांसवाड़ा में तीन, गुजरात में दो व मुंबई में एक स्थान पर कार्रवाई की जा रही है।

टीमें न केवल कंपनी के कार्यालयों में, बल्कि जिम्मेदार लोगों के घरों पर भी सर्च ऑपरेशन कर रही हैं। अधिकारियों ने सभी दस्तावेज़ों की जांच शुरू कर दी है ताकि अवैध लेन-देन और परिवहन से जुड़े तथ्यों को उजागर किया जा सके।

चौथी बार झारखंड के मुख्यमंत्री बने हेमंत सोरेन, मंच पर दिखी इंडिया ब्लॉक की ताकत

रांची । झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) नेता हेमंत सोरेन ने गुरुवार को रांची में झारखंड के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने सोरेनी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में सोरेन का यह चौथा कार्यकाल है। सोरेन ने झारखंड के मुख्यमंत्री के रूप में अपनी अगली पारी से पहले अपने पिता और पार्टी संस्थापक शिबू सोरेन से आशीर्वाद लिया। झारखंड के

मुख्यमंत्री के शपथ समारोह में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, विपक्ष के नेता राहुल गांधी, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, राजद नेता तेजस्वी यादव, कांग्रेस नेता तारिक अनवर, सपा प्रमुख अखिलेश यादव, निर्दलीय सांसद पप्पू यादव सहित विपक्ष के कई शीर्ष नेता शामिल हुए। झारखंड के 14वें सीएम के रूप में हेमंत सोरेन के शपथ लेने के बाद उनकी बहन और जेएमएम नेता अंजनी सोरेन का कहना है, आज पूरा झारखंड खुश है...

हमें पहले से ही यह उम्मीद थी कि हम पूर्ण बहुमत से जीतेंगे।

बदलते परिदृश्य में हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहे सेना:मुर्मु

नयी दिल्ली(एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा है कि तेजी से बदलती भू-राजनीतिक स्थिति में सेनाओं को किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रहने की जरूरत है। श्रीमती मुर्मु ने गुरूवार को तमिलनाडु के वेलिंगटन स्थित रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज के छात्र अधिकारियों और शिक्षकों को संबोधित किया। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर कहा कि देश विकास के पथ पर आगे बढ रहा है और दुनिया रक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में हमारे विकास को स्वीकार कर रही है। भारत भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के उद्देश्य से सशस्त्र बलों को तैयार रखने के लिए स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत एक प्रमुख रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है और एक विश्वसनीय रक्षा भागीदार और बड़ा रक्षा निर्यातक बनने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रपति ने कहा कि तेजी से बदलते भू-राजनीतिक माहौल में हमें किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रहने की जरूरत है। उन्होंने कहा

कि हमें न केवल अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखना है बल्कि साइबर युद्ध और आतंकवाद जैसी नई राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों के लिए भी तैयार रहना है। जलवायु परिवर्तन का मुद्दा नए आयाम हासिल कर रहा है जिसे समझने और प्रबंधित करने की जरूरत है। गहन शोध पर आधारित अद्यतन ज्ञान और अत्याधुनिक तकनीकों को लागू करने की जरूरत है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज ने भारत और मित्र देशों के सशस्त्र बलों के अधिकारियों और नागरिक अधिकारियों को प्रशिक्षित करने तथा शिक्षित करने में सराहनीय योगदान दिया है। पिछले सात दशकों में इसने मध्यम स्तर के अधिकारियों को पेशेवर रूप से तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय सशस्त्र बलों का सभी सम्मान करते हैं। सशस्त्र बल देश की सीमाओं और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में सबसे आगे हैं। राष्ट्रीय हितों की निरंतर रक्षा करने के लिए राष्ट्र को रक्षा बलों पर गर्व है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि यह अच्छी बात है कि महिला अधिकारी अब तीनों सेनाओं में विभिन्न इकाइयों की कमान संभाल रही हैं। उन्होंने कहा कि सभी क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती ताकत और भूमिका सभी के लिए, विशेषकर युवा लड़कियों के लिए उत्साहजनक और प्रेरणादायक है। उन्होंने सशस्त्र बलों में अधिक से अधिक महिलाओं के शामिल होने की उम्मीद जताई, जहां वे असाधारण क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकेंगी और अज्ञात क्षेत्रों में नई जमीन हासिल कर सकेंगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पाठ्यक्रम छात्र अधिकारियों को जिम्मेदारियों के लिए तैयार करेगा तथा ऐसे रणनीतिकार बनाएगा जो जटिल परिस्थितियों से प्रभावी तरीके से निपट सकें।

पीएम मोदी से मिले विदेश मंत्री एस जयशंकर

नईदिल्ली । पड़ोसी देश बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गुरुवार दोपहर पीएम मोदी से मुलाकात की। सूत्रों ने कहा कि अगर दोनों संसद भवन सुचारू रूप से चले तो जयशंकर जल्द ही इस मामले पर बयान देंगे। स्थगित होने के बाद संसद में बैठक हुई, जिसमें बांग्लादेश में उभरती स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया गया। 25 नवंबर को ढाका हवाई अड्डे पर हिंदू भिक्षु चिन्मय कृष्ण दास प्रभु की गिरफ्तारी के बाद बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए। एक वकील सैफुल इस्लाम अलिफ की हत्या कर दी गई, जब चटगांव में एक अदालत के बाहर हजारों लोग गिरफ्तार हिंदू भिक्षु चिन्मय की रिहाई की मांग कर रहे थे।

कृष्ण दास प्रभु, जिन्हें बाद में जमानत देने से इनकार कर दिया गया और देशद्रोह के आरोप में जेल भेज दिया गया। प्रभु इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) के सदस्य थे और हाल ही में उन्हें निष्कासित कर दिया गया था।

उन्हें मंगलवार को जमानत देने से इनकार कर दिया गया, जिसके कारण हिंदू समुदाय ने और अधिक विरोध प्रदर्शन किया, जिन्होंने यूनुस प्रशासन के तहत उनके खिलाफ अत्याचार का हवाला दिया। अंतरिम बांग्लादेश सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस ने चटगांव में वकील की हत्या की निंदा की और घटना की जांच के आदेश दिए। विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने संसद को सूचित किया कि भारत सरकार ने बांग्लादेश सरकार से हिंदुओं और सभी अल्पसंख्यकों और उनके पूजा स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आह्वान किया है। संसद के शीतकालीन सत्र के चौथे दिन जैसे ही सदन की कार्यवाही फिर से शुरू हुई, टीएमसी प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस मुद्दे पर केंद्र से कार्रवाई की मांग करते हुए कहा, चूंकि यह दूसरे देश का मामला है, इसलिए केंद्र सरकार को कार्रवाई करनी चाहिए। इस पर उचित कार्रवाई। हम इस मुद्दे पर उनके (केंद्र सरकार) साथ हैं।

पक्की भर्तियों के बजाय कौशल निगम मार्फत कच्चे कर्मचारी लगाए जा रहे : हुड्डा

चंडीगढ़, । पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने गुरुवार को आरोप लगाया कि हरियाणा की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार रिक्त पड़े दो लाख पदों पर स्थायी भर्तियां करने के बजाय कौशल निगम के जरिये अस्थायी कर्मचारी लगा रही है। उन्होंने यहां जारी बयान में कहा कि सरकार पढ़े-लिखे युवाओं से बेहद कम वेतन में सस्ते मजदूरों की तरह काम ले रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा मनमाने तरीके से बिना किसी कसौटी के कौशल निगम के जरिये भर्तियां कर रही है और कौशल निगम में ना ही किसी तरह की मेरिट है, न ही कोई पेपर, न योग्यता, न आरक्षण, न पारदर्शिता, न पद और न पेंशन।

न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट के लिए इंग्लैंड की टीम में चोटिल कॉक्स की जगह ओली रॉबिन्सन शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने गुरुवार को कहा कि चोटिल जॉर्डन कॉक्स की जगह अनकैप्ड विकेटकीपर-बल्लेबाज ओली रॉबिन्सन को न्यूजीलैंड दौरे के लिए इंग्लैंड की टीम में शामिल किया गया है। कॉक्स ने क्वीन्सटाउन में अभ्यास मैच के दौरान अपने अंगूठे में फ्रैक्चर कर लिया और इसके बाद उन्हें तीन मैचों की आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप सीरीज से बाहर कर दिया गया, जबकि बल्लेबाज ओली पोप क्राइस्टचर्च में पहले टेस्ट के लिए विकेटकीपर की भूमिका निभाएंगे, जबकि नियमित विकेटकीपर जेमी स्मिथ पितृत्व अवकाश पर हैं। रॉबिनसन के इस सप्ताह के अंत में न्यूजीलैंड में टीम में शामिल होने की उम्मीद है और वे 6 दिसंबर से वेलिंगटन में शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट से ही टेस्ट डेब्यू के लिए दावेदारी पेश करेंगे।

यह 25 वर्षीय रॉबिन्सन का इंग्लैंड की सीनियर टीम में पहला चयन है। हाल के दिनों में इंग्लैंड की घरेलू काउंटी चैंपियनशिप में 2024 में 48 की बल्लेबाजी औसत और 2023 में पिछले सीज़न के दौरान और भी अधिक प्रभावशाली 58 के साथ प्रभावित किया है। उन्होंने पिछले दो सीज़न में 92 आउट के साथ स्टंप के पीछे भी अपने कौशल का प्रदर्शन किया है।

इंग्लैंड की टीम: बेन स्टोक्स (कप्तान), रेहान अहमद, गस एटकिंसन, शोएब बशीर, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, ब्रायडन कार्स, जैक क्रॉली, बेन डकेट, जैक लीच, ओली पोप, मैथ्यू पॉट्स, ओली रॉबिन्सन, जो रूट, ओली स्टोन, क्रिस वोक्स

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 : एडिलेड ओवल पर सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 का दूसरा टेस्ट मैच एडिलेड ओवल में खेला जाना है।सीरीज का पहला मुकाबला पर्थ क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया था। इस मुकाबले को भारतीय टीम ने 295 रनों से अपने नाम किया था।एडिलेड में होने वाला टेस्ट मैच 6 दिसंबर से शुरू होगा। ऐसे में आइए इस मैदान पर सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाजों पर एक नजर डालते हैं।

पहले स्थान पर भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली हैं। पर्थ टेस्ट मैच में उन्होंने शानदार शतकीय पारी खेली थी।कोहली ने एडिलेड में अपना पहला टेस्ट मैच साल 2012 में खेला था। अब तक इस खिलाड़ी ने यहां 4 टेस्ट खेले हैं और इसकी 8 पारियों में 63.62 की दमदार औसत के साथ 509 रन बनाए हैं। उनके बल्ले से 3 शतक और 1 अर्धशतक निकला है।उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 141 रन रहा है।

सूची में दूसरे स्थान पर पूर्व भारतीय दिग्गज राहुल द्रविड़ हैं। उन्होंने इस मैदान पर पहला मुकाबला साल 1999 में खेला था।4 टेस्ट की 8 पारियों में इस खिलाड़ी ने 66.83 की औसत से 401 रन बनाए थे। उनके बल्ले से 1 शतक और 1 अर्धशतक निकला था। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 233 रन रहा था।द्रविड़ ने इस मैदान पर अपना आखिरी मुकाबला साल 2012 में खेला था। वह 2 बार नाबाद भी रहे थे।

भारतीय टीम के पूर्व दिग्गज सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग इस सूची में तीसरे स्थान पर हैं। उन्होंने इस मैदान पर पहला मुकाबला साल 2003 में खेला था।आखिरी बार वह 2012 में यहां खेलते हुए नजर आए थे।3 टेस्ट की 6 पारियों में इस खिलाड़ी ने 64.66 की औसत से 388 रन बनाए थे। उनके बल्ले से 1 शतक और 2 अर्धशतक निकले थे। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर इस मैदान पर 151 रन रहा था।

वीवीएस लक्ष्मण इस सूची में चौथे स्थान पर हैं। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के इस मैदान पर अपना पहला मुकाबला साल 1999 में खेला था। आखिरी बार वह यहां 2012 में खेलते हुए नजर आए थे।4 मैच की 8 पारियों में इस खिलाड़ी ने 42.12 की औसत से 337 रन बनाए थे। उनके बल्ले से 1 शतक और 1 अर्धशतक निकला था।इस पूर्व दिग्गज खिलाड़ी का इस मैदान पर सर्वश्रेष्ठ स्कोर 148 रन रहा था।

चोटिल स्टेफ़नी टेलर भारत दौरे से बाहर

सेंट जोंस (एंटीगा)। वेस्टइंडीज़ भारत के आगामी सफ़ेद गेंद दौरे पर ऑलराउंडर स्टेफ़नी टेलर के बिना जाएगी। क्रिकेट वेस्ट इंडीज की रिलीज़ के अनुसार 33 वर्षीय टेलर इस समय इंजरी से रिकवर कर रही हैं और भारत में होने वाले आगामी तीन वनडे और टी20 सीरीज के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगी। दो वर्ष पहले अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर चुकीं डिएंड्रा डॉटिन ने इस साल टी20 वर्ल्ड कप में वापसी की थी और वह अब भारत के दौरे पर वनडे में वापसी करेंगी। उन्होंने अपना अंतिम वनडे मार्च 2022 में खेला था लेकिन सफ़ेद गेंद में उनका हालिया फ़ॉर्म शानदार रहा है। डॉटिन 2024 के टी20 वर्ल्ड कप के दौरान सबसे प्रभावी खिलाड़ी थीं और इस महीने की शुरुआत में उन्होंने डब्लूबीबीएल में मेलबर्न रेनेगेड्स के लिए एडिलेड स्ट्राइकर्स के ख़िलाफ़ 18 गेंदों पर नाबाद 46 रन बनाए थे ।

वर्ल्ड कप दल से बाहर रहने वालीं शाबिका गजनबी और रशादा विलियम्स की वनडे और टी20 दल दोनों में वापसी हुई है। हीली मैथ्यूज़ (कप्तान), शेमाइन कैंपबेल (उपकप्तान), आलिया एलेन, शामिलिया कॉनेल, नेरिसा क्राफ़्टन, डिएंड्रा डॉटिन, एफ़ी फ़्लेचर, शाबिका गजनबी, चिनेल हेनरी, ज़ायदा जेम्स, कियाना जोसेफ़, मैंडी मांगरू, अश्मिनी मुनिसर, करिश्मा रामहरक, रशादा विलियम्स

सुनील छेत्री के ऐतिहासिक गोलों ने बेंगलुरू एफसी को बचाया

कोलकाता (एजेंसी)। अनुभवी स्ट्राइकर सुनील छेत्री के ऐतिहासिक गोलों ने बेंगलुरू एफसी की नैया को डूबने से बचाते हुए मोहम्मडन एससी पर जीत शानदार जीत दिलाई। उनके दोनों गोलों की मदद से ब्लूज ने बुधवार को एक गोल से पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए किशोर भारती क्रीड़ांगन में खेले गए इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 मुकाबले में मेजबान ब्लैक पैंथर्स पर 2-1 से जीत हासिल की।

बेंगलुरू एफसी की जीत में सुनील छेत्री ने (पेनल्टी किक) 82वें और 90+9वें मिनट में गोल किए। सुनील छेत्री को ऐतिहासिक दोनों गोल करने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया।

इस हार के बाद मोहम्मडन स्पोर्टिंग का आईएसएल 2024-25 में अपनी पहली घरेलू जीत का इंतजार बढ़ गया है और साथ ही वो अपने पांच घरेलू मैचों में जीत से दूर रहने वाली आईएसएल इतिहास की पहली टीम बन गई है। इससे रूसी हेड कोच एंड्री चेर्निशोव निश्चित रूप से निराश होंगे। मोहम्मडन स्पोर्टिंग आठ मैचों में एक जीत, दो ड्रा और पांच हार से पांच अंक लेकर तालिका में 12वें स्थान पर बनी हुई है।

वहीं, ब्लूज द्वारा पिछड़ने के बाद शानदार जीत हासिल करने से स्पेनिश हेड जेरार्ड जारागोजा जरूर राहत महसूस कर रहे होंगे। बेंगलुरू एफसी नौ मैचों में छह जीत, दो ड्रा और एक हार से 20 अंक लेकर तालिका में दूसरे स्थान से शीर्ष पर पहुंच गई है।मैच का पहला गोल आठवें मिनट में आया, जब सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक के स्ट्राइकर सीजर मंजोकी ने मोहम्मडन स्पोर्टिंग को शुरुआती बढ़त दिलाते हुए स्कोर 1-0 कर दिया। दाहिने फ्लैंक पर मिली कॉर्नर किक पर उज्बेक मिडफील्डर मिर्जालोल कासिमोव ने हवाई रास्ते से क्रॉस डालकर गेंद को छह गज के खतरनाक इलाके के ठीक आगे पहुंचाया, जहां मौजूद मंजोकी ने सटीक हैडर लगाया और गेंद गोलकीपर गुरप्रीत संधू के बायीं तरफ से टिप्पा खाकर दाहिने कॉर्नर पर गोल जाल में जा उलझी।

82वें मिनट में स्थानापन्न स्ट्राइकर सुनील छेत्री ने पेनल्टी किक पर अपना ऐतिहासिक गोल करके बेंगलुरू एफसी को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। बेंगलुरू एफसी को पेनल्टी किक के रूप सुनहरा मौका 79वें मिनट में मिला, जब कॉर्नर किक के दौरान मंजोकी ने अपने बॉक्स के अदंर मिडफील्डर पेड्रो कैपो को हाथों से गिराकर फाउल कर दिया और रैफरी क्रिस्टल जॉन ने लंबी सीटी बजाकर स्पॉट किक का इशारा किया।

इसके बाद सुनील छेत्री ने दाहिने पैर से करारा शॉट लगाकर गेंद को लेफ्ट कॉर्नर पर गोल जाल में उलझा दिया जबकि गोलकीपर भास्कर रॉय दाहिनी तरफ डाइव लगाने के बावजूद गेंद तक नहीं पहुंच पाए।

केन विलियमसन ने जड़ा 36वां अर्धशतक, शतक से चूके

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम और इंग्लैंड क्रिकेट टीम के बीच खेले जा रहे पहले टेस्ट मैच में केन विलियमसन ने शानदार पारी (93) खेली है।यह उनके टेस्ट करियर का 36वां अर्धशतक है। इंग्लैंड के खिलाफ इस खिलाड़ी ने अपना 5वां अर्धशतक जड़ा है।साल 2024 में विलियमसन के बल्ले से निकला यह तीसरा अर्धशतक है।विलियमसन भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज में चोटिल थे और 1 भी मुकाबला नहीं खेल पाए थे। इस खिलाड़ी ने शानदार वापसी की है। विलियमसन ने 197 गेंदों का सामना करते हुए 93 रन बनाए।कीवी टीम को पहला झटका 4 रन पर लगा था। डेवोन कॉनवे 2 रन बानकर आउट हुए। इसके बाद विलियमसन ने टॉम लैथम के साथ 58 रन, रचिन रविंद्र के साथ 68 और डेरिल मिचेल के साथ 69 रन की साझेदारी निभाई।अन्य बल्लेबाज आउट हुए, लेकिन विलियमसन ने एक छोर संभाले रखा। विलियमसन शतक से सिर्फ 7 रन दूर थे, तभी उन्हें गस एटकिंसन ने पवेलियन भेज दिया। इंग्लैंड के खिलाफ विलियमसन ने पहला टेस्ट मैच साल 2013 में खेला था। अब तक इस खिलाड़ी ने 17 मुकाबले खेले हैं और इसकी 30 पारियों में 40.29 की उम्दा औसत के साथ 1,088 रन बनाने में सफल रहे हैं।उनके बल्ले से 4 शतक के अलावा 5 अर्धशतक भी निकले हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 132 रन रहा है।विलियमनस ने अपने टेस्ट करियर में सबसे ज्यादा रन (1,519) पाकिस्तान क्रिकेट टीम के खिलाफ बनाए हैं। साल 2024 में विलियमसन ने 7 टेस्ट खेले हैं। इसकी 13 पारियों में 64.63 की शानदार औसत के साथ 711 रन बनाए हैं। उनके बल्ले से इस साल 3 शतक और 3 अर्धशतक निकले हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 64.63 का रहा है।साल 2017 से लेकर 2023 तक विलियमसन का एक बार भी टेस्ट क्रिकेट के 1 कैलेंडर वर्ष में औसत 50 से कम का नहीं रहा है।साल 2016 में उन्होंने 47.06 के औसत से बल्लेबाजी की थी।

नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में हिस्सा नहीं लेंगी मनु भाकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की स्टार निशानेबाज और पेरिस ओलंपिक्स 2024 की डबल मेडल विजेता मनु भाकर ने दोबारा ट्रेनिंग शुरू कर दी है। लेकिन उनके फैंस के लिए एक निराशाजक खबर है क्योंकि मनु अगले महीने होने वाली नेशनल चैंपियनशिप का हिस्सा नहीं होंगी।

ये पेरिस ओलंपिक्स के बाद ऐसा दूसरा बड़ा टूर्नामेंट होगा, जिसमें मनु भाकर ने भाग लेने से इनकार कर दिया है। इससे पहले उन्होंने अक्टूबर महीन में दिल्ली में हुए आईएसएसएफ शूटिंग वर्ल्ड कप फाइनल से भी अपना नाम वापस ले लिया था। दरअसल, मनु भाकर के कोच जसपाल राणा का कहना है कि मनु भाकर नेशनल चैंपियनशिप में भाग नहीं लेंगी।

कोच के मुताबिक मनु को ट्रेनिंग में वापस आए उतना समय नहीं हुआ है, जिससे वो अभी बड़े टूर्नामेंट में भाग ले सकें। अभी भारतीय निशानेबाज अपने कोच के साथ यूरोप में है, जहां वो अपनी ग्रिप को बेहतर बनाने पर जोर दे रही हैं। वहीं टाइम्स ऑफ इंडिया से जसपाल राणा ने कहा कि, हम फिलहाल मनु भाकर की ग्रिप को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

मार्श की चोट की चिंताओं के बीच ऑलराउंडर बो वेबस्टर ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम में शामिल

कैनबरा। मिचेल मार्श की चोट की चिंताओं के बीच ऑस्ट्रेलिया ने तस्मानिया के ऑलराउंडर बो वेबस्टर को ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट टीम में शामिल किया है।

वेबस्टर मध्यम तेज़ गेंदबाज़ी के साथ-साथ ज़रूरत पड़ने पर ऑफ़ स्पिन भी कर लेते हैं। उन्होंने हाल ही में इंडिया ए के ख़िलाफ़ सीरीज़ में ऑस्ट्रेलिया ए के लिए खेलते हुए प्रभावित किया था।

इसके अलावा उन्होंने हालिया शेफ़ील्ड शील्ड मैच में न्यू साउथ वेल्स के ख़िलाफ़ 61 और 49 का स्कोर बनाने के साथ-साथ पांच विकेट भी लिए। वह ऑस्ट्रेलिया के सर्वश्रेष्ठ स्लिप फ़ील्डर्स में से भी एक हैं।

इंडिया ए के ख़िलाफ़ दो चार-दिवसीय मैचों की चार पारियों में दो बार नाबाद रहते हुए उन्होंने 145 रन बनाने के साथ-साथ 19.57 की औसत से सात विकेट भी लिए थे।

पिछले दो साल के प्रथम श्रेणी मैचों की बात की जाए तो उनका बल्लेबाज़ी औसत 53.23 और गेंदबाज़ी औसत 31.71 का रहा है।

इससे पहले ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कोच और चयनकर्ता एंड्र्यू मैक्डोनाल्ड ने एडिलेड टेस्ट के लिए बिना किसी बदलाव की टीम घोषणा करते हुए यह भी सूचित किया था कि ऑलराउंडर मिचेल मार्श की फ़िटनेस पर थोड़ा संदेह है। मार्श के फ़िटनेस के बारे में ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने भी चिंता जताई थी।

हालांकि 13-सदस्यीय टीम में जोश इंगलिस के रूप में अतिरिक्त बल्लेबाज़ हैं, लेकिन अपनी ऑलराउंड क्षमताओं के कारण वेबस्टर टेस्ट डेब्यू के दावेदार बन गए।

दूसरा टेस्ट एडिलेड में 6 दिसंबर से शुरू होगा। पर्थ टेस्ट जीतकर भारतीय टीम ने पांच मैचों की टेस्ट सीरीज़ में 1-0 की बढ़त बना ली है।

एडिलेड टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम : पैट कमिंस (कप्तान), स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, जोश हेज़लवुड, ट्रैविस हेड, जोश इंगलिस, उस्मान ख़्वाजा, मार्नस लाबुशेन, नाथन लियोन, मिचेल मार्श, नेथन मैकस्वीनी, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क, बो वेबस्टर

जायसवाल और गिल नहीं नीतिश कुमार रेड्डी को बताया भविष्य का सुपरस्टार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली को भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक ऐसे कप्तान के रुप में याद किया जाता है जिन्होंने टीम इंडिया को विदेशों में लड़ना और जीतना सिखाया. ऐसा गांगुली इसलिए कर पाए क्योंकि उनके पास खिलाड़ियों की समझ और परख थी. वीरेंद्र सहवाग, हरभजन सिंह, युवराज सिंह, जहीर खान, आशीष नेहरा, मोहम्मद कैफ, एमएस धोनी जैसे खिलाड़ियों को टीम इंडिया में लाने का श्रेय गांगुली को ही जाता है. अब ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गए एक युवा खिलाड़ी के बारे में गांगुली ने बड़ी बात कही है.

भारतीय क्रिकेट टीम फिलहाल ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है. पर्थ में खेले गए पहले टेस्ट को भारत ने 295 रन से जीता था. इस मैच में जसप्रीत बुमराह, यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली और केएल राहुल ने शानदार प्रदर्शन किया था. इस मैच से भारत के लिए ऑलराउंडर नीतिश कुमार रेड्डी ने भी डेब्यू किया था. रेड्डी ने दोनों पारियों में अच्छी बल्लेबाजी के साथ गेंदबाजी भी शानदार की थी. उनके प्रदर्शन को देखते हुए सौरव गांगुली ने उन्हें भविष्य में टेस्ट फॉर्मेट का सुपरस्टार बताया है. गांगुली ने कहा कि, पर्थ में नीतिश कुमार रेड्डी ने डेब्यू किया था. मैं हैदराबाद के इस लड़के से बेहद प्रभावित हूं. वो इस बड़े टेस्ट में कभी भी दबाव में नहीं दिखा और संयमित और संतुलित रहते हुए अच्छे खेल का प्रदर्शन किया. वो लंबी रेस का घोड़ा है और भविष्य का सुपरस्टार है.

नीतिश कुमार रेड्डी ने पहली पारी में 41 और दूसरी पारी में नाबाद 38 रन बनाए थे. बल्लेबाजी के दौरान ऐसा कभी नहीं लगा कि नीतिश अपना पहला टेस्ट खेल रहे हैं. नीतिश की गेंदबाजी भी अच्छी रही और दूसरी पारी में 1 विकेट भी उन्हे मिला. हार्दिक पांड्या टेस्ट नहीं खेलते जबकि शार्दुल ठाकुर को ड्रॉप कर दिया गया है. ऐसे में अगर रेड्डी का प्रदर्शन अच्छा रहा तो वे लंबे समय के लिए टेस्ट फॉर्मेट का हिस्सा हो सकते हैं.

कलेक्टर अनुराग वर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई बैठक

खेलो एमपी यूथ गेम्स में होगा 19 खेलों का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले में खेलो एमपी यूथ गेम्स 2024 के अंतर्गत 5 दिसंबर से कुल 19 खेलों की प्रतियोगिताओं का ब्लाक और जिला स्तर पर आयोजन कर बेस्ट खिलाडियों का चयन किया जायेगा। खेलो एमपी यूथ गेम्स में टूर्नामेंट महत्वपूर्ण नहीं होगा, बल्कि सभी खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले प्रतिभाशाली खिलाडियों के चयन को महत्व दिया जायेगा। इस आशय की जानकारी गुरूवार को कलेक्टर अनुराग वर्मा की अध्यक्षता में संपन्न तत्संबंधी बैठक में दी गई। इस मौके पर संभागीय खेल अधिकारी एमके धौलपुरी, सिविल सर्जन डॉ. मनोज शुक्ला, जिला खेल अधिकारी एसपी तिवारी, जिला ₹ीडा अधिकारी मीना त्रिपाठी, खेल संघों के प्रतिनिधि अशोक प्रताप सिंह, राजधर मालवीय, अंबुज सिंह, संदीप भारती, विष्णु त्रिपाठी, ज्योति तिवारी भी उपस्थित रहे।

बैठक में संभागीय खेल अधिकारी एमके धौलपुरी ने बताया कि खेलो एमपी यूथ गेम्स 2024 में 19 खेलों का आयोजन किया जायेगा। जिनमें खो-खो, वेट लिफ्टिंग, टेबल टेनिस, योगासन, टेनिस, तैराकी, बालीबाल, शतरंज, कुश्ती, हॉकी, ₹ि केट, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बॉक्सिंग, मल खम्ब, कबड्डी, फुटबाल, जूडो, बास्केट बॉल की प्रतियोगिता कर प्रतिभाशाली खिलाडियों का चयन किया जायेगा। सतना और मैहर जिले की सभी 8 विकासखण्ड स्तरीय प्रतियोगिताओं से जिला स्तर पर श्रेष्ठ खिलाडियों का चयन कर उन्हें संभाग स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए भेजा जायेगा। इनमें 6 खेलों के लिए सीधे राज्य स्तर के लिए खिलाडियों का चयन हो सकेगा। निर्धारित कार्य₹ मानुसार 5 से 11 दिसंबर तक ब्लाक स्तर, 13 से 15 दिसंबर जिला स्तर, 17 से 22 दिसंबर संभागीय स्तर और 24 से 28 दिसंबर तक राज्य स्तरीय खेलों के आयोजन होंगे।

कलेक्टर अनुराग वर्मा ने कहा कि जिले में खेलों की अधोसंरचनात्मक सुविधाओं के निर्माण से खेलों का कैनवास बढा है। सतना के खिलाडी बच्चे भी खेलों में उत्साहपूर्वक भागीदारी कर रहे हैं। जिससे खेलों के प्रति सकारात्मक बदलाव आया है। उन्होंने कहा कि खेलो एमपी यूथ गेम्स 2024 एक मंच और माध्यम है जिसके माध्यम से खेलो में ब्लाक स्तर से राज्य स्तर तक खिलाडियों को आगे बढने का अवसर मिलेगा। उन्होंने जिले की खेल संस्थाओं एवं संगठनों से खेलों में स₹ि य भागीदारी निभाने की अपील की।

कमिश्नर राजस्व महाअभियान तथा विकास कार्यों की करेंगे समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद की अध्यक्षता में 29 नवम्बर को प्रातः 11 बजे से कमिश्नर कार्यालय सभागार में कलेक्टर कांफ्रेंस आयोजित की जा रही है। बैठक में कमिश्नर राजस्व कार्यों, पेयजल व्यवस्था तथा विकास कार्यों की जिलेवार समीक्षा करेंगे। बैठक में प्रातः 11 बजे से प्रातः 11.30 बजे तक संवेदनशील विषयों पर कार्यवाही की समीक्षा की जाएगी। प्रातः 11.30 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम की संभागीय सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की जाएगी। इसके बाद दोपहर 12.30 बजे से दोपहर एक बजे तक राजस्व महाअभियान एवं वन व्यवस्थापन की समीक्षा की जाएगी। इसके बाद दोपहर 2.30 बजे से आयोजित विकास कार्यों की समीक्षा बैठक में पेयजल व्यवस्था, समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन, प्रधानमंत्री आवास योजना, गौशाला निर्माण, बिजली की आपूर्ति, खनिज राजस्व वसूली तथा छात्रवृत्ति वितरण की समीक्षा की जाएगी। बैठक में सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की भी जिलेवार समीक्षा की जाएगी। संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा संभागीय अधिकारी बैठक में उपस्थित रहेंगे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी 4 दिसंबर को सतना और मैहर में

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री सुखबीर सिंह 4 दिसंबर को सतना और मैहर जिले में निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की बैठक लेकर फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 के कार्य की समीक्षा करेंगे। निर्धारित कार्य₹ मानुसार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी 4 दिसंबर को रीवा से सतना आकर प्रातः 11 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समीक्षा बैठक लेंगे। इसके बाद मैहर जिले में दोपहर 1 बजे समीक्षा बैठक लेने के बाद अपरान्ह 2.30 बजे जबलपुर के लिए प्रस्थान करेंगे।

आंगनवाडी केन्द्र अब प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुलेंगे

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्रालय भोपाल के निर्देशों के अनु₹ म में कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्री अनुराग वर्मा द्वारा जिले में शीत ऋतु के प्रभाव से तापमान में गिरावट दर्ज होने के कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका को दृष्टिगत रखते हुए आगामी आदेश तक आंगनवाड़ी केन्द्रों का संचालन प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक निर्धारित करने का आदेश जारी किया गया है। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास सौरभ सिंह द्वारा आंगनवाड़ी केन्द्र में गतिविधियों के संचालन की समय-सारणी जारी की गई है। जिसके अनुसार प्रातः 10 बजे आंगनवाडी खोलना तथा बच्चों का स्वागत करना, बच्चों की साफ-सफाई का अवलोकन तथा आवश्यकतानुसार बच्चों की व्यक्तिगत साफ-सफाई, प्रातः 10:30 बजे से 11 बजे तक सामूहिक गतिविधियों का आयोजन, प्रातः 11 बजे से 11:30 बजे तक नाश्ता, 11:30 से दोपहर 12 बजे तक बच्चों के द्वारा स्वतंत्र खेल, दोपहर 12 बजे से 12:30 बजे तक छोटे समूह की गतिविधियों का आयोजन, दोपहर 12:30 बजे से 1 बजे तक भाषा एवं साक्षरता पूर्व कौशल गतिविधियों का आयोजन, दोपहर 1 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन, दोपहर 1:30 से दोपहर 2 बजे तक बाहरी खेल गतिविधियों का आयोजन, दोपहर 2 से 3 बजे तक भोजन एवं बच्चों को उनके गन्तव्य (अभिभावकों) तक पहुंचाना निर्धारित किया गया है। इसी प्रकार दोपहर 3 बजे से सायं 4:30 बजे तक थर्ड मील, पोषण परामर्श, मंगल दिवस, वृद्धि, निगरानी, किशोरी बालिका योजनान्तर्गत परामर्श, गृह भेंट तथा अपरान्ह 4:30 से सायं 5 बजे तक रिकार्ड संधारण का कार्य किया जायेगा।

देवराजनगर में अब शिवर 16 दिसंबर को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। शासन से प्राप्त निर्देशानुसार मैहर जिले के प्रत्येक विकासखण्ड की क्लस्टर मुख्यालय की ग्राम पंचायत में लोक कल्याणकारी जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अपर कलेक्टर मैहर शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि रामनगर विकासखण्ड की ग्राम पंचायत देवराजनगर में 30 नवम्बर को आयोजित होने वाला जन समस्या निवारण शिविर अब 16 दिसंबर 2024 को आयोजित होगा। शिविर प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक चलेंगे।

फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 4 दिसंबर को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 के कार्य की मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा 4 दिसंबर को अपरान्ह 11 बजे से संयुक्त कलेक्ट्रेट भवन सतना के सभाकक्ष में समीक्षा की जायेगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराग वर्मा द्वारा 28 नवम्बर को समरी रिवीजन के कार्य की समीक्षा करने पर पाया गया कि आयोग द्वारा 18-19 आयु वर्ग के मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़ने हेतु निर्धारित लक्ष्य 28528 के विरुद्ध कार्यालय द्वारा निरंतर स्मरण कराए जाने के बावजूद भी मात्र 7617 नए नाम जोड़े गए हैं। इसी प्रकार जिले की विधानसभा क्षेत्र में जेंडर रेशियों एवं ईपी रेशियो में भी गैप पाया गया है। समस्त ईआरओ/एईआरओ व्यक्तिगत रुचि लेकर बीएलओ के माध्यम से नवीन/छूटे हुए पात्र मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में दर्ज करावे। तथा साथ ही छूटी हुई पात्र महिलाओं के नाम भी शत-प्रतिशत मतदाता सूची में दर्ज कराए जाने की कार्यवाही की जाये। जिला निर्वाचन अधिकारी ने फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 के संबंध में सभी विधानसभा क्षेत्र के अनुविभागीय अधिकारी राजस्व एवं निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, अनुविभाग अधिकारी राजस्व अनुभाग उचेहरा एवं अनुभाग रामनगर जिला मैहर को बैठक में समस्त जानकारियों के साथ अनिवार्य रूप से उपस्थित रहने के निर्देश दिये हैं।

जिले में नरवाई जलाने की 223 घटनायें सैटेलाइट मैपिंग में आई सामने

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। पर्यावरण सुरक्षा के लिये ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशानुसार फसलों (विशेषतः धान एवं गेहूं) की कटाई उपरांत फसल अवशेषों को खेतों में जलाना प्रतिबंधित किया गया है। जिले में भी नरवाई जलाने से होने वाली आगजनित घटनाओं पर नियंत्रण के लिये कलेक्टर सतना अनुराग वर्मा एवं कलेक्टर मैहर रानी बाटड द्वारा प्रतिबंधात्मक आदेश जारी कर अनुविभागीय दंडाधिकारियों को संबंधित व्यक्ति पर तत्काल पात्रतानुसार जुर्माना अधिरोपित करते हुये आग के कारण का पंचनामा तैयार करने के निर्देश दिये गये हैं। साथ ही ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही करने के निर्देश भी दिये गये हैं। लेकिन प्रतिबंधों के बावजूद भी जिले में नरवाई जलाने की घटनायें सामने आ रही हैं। उप संचालक किसान कल्याण एवं कृषि विकास ने बताया कि कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय भोपाल से प्राप्त सैटेलाइट मॉनीटरिंग की रिपोर्ट अनुसार जिले के अलग-अलग अनुविभागों में 19 नवम्बर से 24 नवम्बर तक 223 स्थानों पर नरवाई जलाने की घटनायें रिकॉर्ड की गई हैं। जिसमें नागौद में 51, उचेहरा में 32, रामपुर बघेलान में 32, कोटर में 20, रघुराजनगर में 25, अमरपाटन में 26, मैहर में 20, बिरसिंहपुर में 6, कोठी में 7 एवं रामनगर में 4 नरवाई जलाने की घटनायें रिकार्ड की गई है। उप संचालक कृषि ने संबंधित अनुविभागीय दंडाधिकारियों को सैटेलाइट मॉनीटरिंग की रिपोर्ट से अवगत कराते हुये जिला दंडाधिकारी के निर्देशों के अनुरुप कार्यवाही करने का अनुरोध किया है।

विकास कार्यों की करेंगे समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद की अध्यक्षता में 29 नवम्बर को आयोजित होने वाली कलेक्टर कांफ्रेंस अब 30 नवम्बर को प्रातः 11 बजे से कमिश्नर कार्यालय सभागार में कलेक्टर कांफ्रेंस आयोजित की जायेगी।

जिला स्तरीय लोक कल्याणकारी शिविर में 90 आवेदन मिले

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार मैहर जिले के बदेरा बस स्टैण्ड परिसर में गुरूवार को कलेक्टर मैहर रानी बाटड के निर्देशन में आयोजित जिला स्तरीय लोक कल्याणकारी जन समस्या निवारण शिविर में दूर-दराज की ग्राम पंचायत से आये ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं से संबंधित 90 आवेदन पत्र प्रस्तुत किये। शिविर में उपस्थित जिला और विकासखण्ड स्तर के अधिकारियों ने मौके पर ही 25 आवेदनों का निराकरण किया। शिविर में विधायक मैहर श्रीकांत चतुर्वेदी, ज़िला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, कलेक्टर रानी बाटड, जिला अध्यक्ष कमलेश सुहाने सहित जनप्रतिनिधि एवं विभागीय उपस्थित रहे।

जिले में 10623 टन यूरिया तथा 929 टन डीएपी है उपलब्ध

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों के लिए खाद की समुचित व्यवस्था की गयी है। रीवा जिले में सहकारी समिति विपणन संघ तथा निजी विक्रेताओं के पास 28 नवम्बर की स्थिति में 10623.29 टन यूरिया तथा 929.30 टन डीएपी खाद उपलब्ध है। इसके साथ-साथ जिले में 1973.73 टन एनपीके, 84.65 टन एमओपी तथा 3914.35 टन सिंगल सुपर फास्फेट भी उपलब्ध है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि जिले के किसान खाद की आपूर्ति के लिए चिंतित न हो। खाद की नियमित आपूर्ति जारी है। किसानों को अगले एक सप्ताह जितनी खाद की जरूरत उसी की खरीद करें। उप संचालक ने बताया कि अब तक किसानों को 10959.40 टन यूरिया तथा 5663.76 टन डीएपी का वितरण किया जा चुका है। इसी तरह किसानों को 5584.50 टन एनपीके, 29.60 टन पोटाश खाद तथा 1105.15 टन सिंगल सुपर फास्फेट खाद का वितरण किया जा चुका है। किसान भाईयों के लिए डीएपी के स्थान पर यूरिया और एनपीके अथवा यूरिया और एसएसपी खाद का उपयोग अधिक लाभकारी है। सिंगल तथा डबल लाक से प्रतिदिन खाद वितरित की जा रही है। जिस केन्द्र में अधिक संख्या में किसान खाद लेने पहुंच रहे हैं वहां अधिकारियों की निगरानी में टोकन देकर खाद का वितरण किया जा रहा है। वर्तमान में मार्कफेड, सहकारी समिति तथा निजी विक्रेताओं के पास खाद उपलब्ध है।

चलती 108 जननी एक्सप्रेस एम्बुलेंस में किशोरी के साथ दुष्कर्म की वारदात

रिश्ते के जीजा पर पर आरोप. मामा की बेटी, मामा सहित दोस्त भी वारदात में शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले के हनुमना थाना क्षेत्र से दुष्कर्म की वारदात सामने आई है जहां किशोरी के साथ रिश्ते के जीजा पर ही दुष्कर्म के आरोप लगे है. डरी सहमी पीड़िता किशोरी ने घटना के दूसरे दिन थाने पहुंचकर पुलिस से शिकायत की. शिकायत प्राप्त होते ही पुलिस की टीम एक्टिव हुई और वारदात में शामिल दो लोगो को पुलिस ने गिरफ्तार करते हुए 108 जननी एक्सप्रेस एम्बुलेंस को भी जप्त कर लिया. विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा कायम करके पुलिस की टीम अब वारदात में शामिल अन्य आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है।

जीजा पर नाबालिग साली से दुष्कर्म का आरोप: घटना मऊगंज जिले के हनुमान थाना क्षेत्र की है। पीड़िता किशोरी के मुताबिक बीते 22 नवंबर को उसके मामा की छोटी बेटी मंजू उसके घर आई और पीड़िता को अपने साथ उसके घर चलने के लिए कहा पीड़िता जब उसके घर पहुंची तो मंजू की बड़ी बहन मनीषा अपने पति राजेश केवट जो की रिश्ते में पीड़िता का जीजा है दोनो लोग 108 एंबुलेंस से आए हुए थे। इसके आलावा एंबुलेंस में मामा रामायण और ड्राईवर पंडित भी उपस्थित थे इसी दौरान मंजू ने कहा की चलो जीजा राजेश केवट के घर हाटा गांव घूमने चलते है। इतना कहने के बाद पीड़िता जाने की लिए राजी हो गई।

ममेरी बहन और मामा ने रचा षडयंत्र जीजा ने किया दुष्कर्म : पीड़िता के अनुसार वह और उसके मामा की छोटी बेटी मंजू एंबुलेंस के पीछे बैठ गए. जीजा राजेश केवट, मामा रामायण एंबुलेंस में आगे की सीट पर बैठ गए जबकि पण्डित वाहन की ड्राइविंग कर रहा था कुछ दूर जानें के बाद रास्ते में पानी लेने के बहाने बहन एंबुलेंस से नीचे उतर गई जिसके बाद आगे बैठा जीजा उतर कर पीछे की सीट में आया तभी एंबुलेंस आगे की ओर बढ़ने लगी इस बारे में जब पीड़िता ने पूछताछ की तो उसे जीजा राजेश ने चुप बैठने के लिए कहा इसके बाद जब पीड़िता ने शोर मचाना शुरू किया तो जीजा ने उसे जान से मार देने की धमकी दी।

चलती 108 जननी एक्सप्रेस में किशोरी के साथ जीजा ने किया दुष्कर्म : पीड़िता का आरोप है की एंबुलेस को एक पहाड़ी की तरफ ले जानें लगे इसके बाद जीजा राजेश ने चलती गाड़ी में ही तीन बार उसके साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। जीजा ने घटना के बारे में किसी से कहने के लिए मना करते हुए धमकी दी थी। रात भर उसे एंबुलेंस में घुमाया गया। 23 नवंबर की सुबह डरी सहमी पीडिता अपने घर पहुंची. उसने किसी तरह से हिम्मत जुटाई और घटना के बारे में परिजनों को बताया जानकारी लगते ही परिजनों के पैरो तले जमीन खिसक गई. पीड़िता को लेकर परिजन थाने पहुंचे और घटना के संबंध में शिकायत दर्ज करवाई।

जीजा और ड्राईवर गिरफ्तार मामा और मामा की बेटी फरार : पुलिस ने तत्काल मामला पंजीबद्ध किया और आरोपी जीजा राजेश और ड्राईवर पण्डित को हिरासत में ले लिया। वहीं पुलिस ने वरदात में इस्तेमाल की गई 108 जननी एक्सप्रेस एंबुलेंस को रीवा से बरामद कर लिया है। पुलिस ने पॉक्सो एक्ट के साथ ही बीएनएस के तहत मामला पंजीबद्ध करते हुए मामले में फरार पीड़िता की ममेरी बहन मंजू और मामा रामायण की तलाश में जुट गई।

जल्द गिरफ्तार होंगे दो अन्य आरोपी डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय : मामले को लेकर डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय का कहना है की 16 वर्षीय नाबालिक बच्ची मऊगंज स्थित अपने ननिहाल में रहती है उसने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है उसका कहना था की रिश्ते की दीदी उसे लेकर अपने घर गई थी उसे एक वैन में बैठाया इसके बाद रास्ते में बहन उतर गई। बहन के अलावा वैन में अन्य तीन लोग मौजूद थे जिसमें से एक व्यक्ती ने उसके साथ गलत कृत्य किया. मामले में चार आरोपी बनाए गए है दो लोग गिरफ्तार हुए है दो की तलाश की जा रहीं है जिन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

रीवा से बरामद हुई 108 जननी एक्सप्रेस

बता दें की 108 जननी एक्सप्रेस प्राइवेट वाहन है जो की शासकीय योजना के तहत किसी भी आपातकालीन स्थिति में गर्भवती महिलाओं को लाकर अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचने का कार्य करती है। किशोरी के साथ हुई दुष्कर्म की वारदात में इस्तेमाल की गई एंबुलेंस रीवा में लाकर रखी गई थी जिसे मऊगंज पुलिस में बरामद करते हुए जप्त कर लिया है और आगे की कार्रवाई में जुटी हुइ है।

बटवारें के संबंध में आपत्ति 3 दिसंबर तक आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुनिस्पल बोर्ड नगर निगम एवं देवमणि बेवा रामनारायण उर्फ साहब परमानंद, साच्चितानंद पिता जयराम केशव प्रसाद पिता रघुनंदनराम निवासी रीवा तथा मीना पिता स्व. मो. रहमतउल्ला, मो. इसरार, मो. हसबाबू, मो. वाहिद, मो. जाहिद, मो. इम्तियाज मो. न्याज पिता स्व. मो. रहमतउल्ला निवासी घोघर जिला रीवा के आराजी नंबर 96/1/3(एस) रकवा 1.089 हेक्टेयर के बटवारे के संबंध में आपत्ति 3 दिसंबर तक दर्ज करायी जा सकती है। तहसीलदार हुजूर के न्यायालय में नियत तिथि तक आपत्ति प्रस्तुत की जा सकेंगी। नियत तिथि के उपरांत उपस्थित न होने पर एक पय कार्यवाही करते हुए प्रकरण का निराकरण कर दिया जायेगा।

हम होंगे कामयाब जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। ग्राम पंचायत सगरा में बाल विवाह बाल श्रम मुक्त भारत अभियान के साथ ही वृहद महिला जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल रही। इस अवसर पर प्रतिभा शर्मा ने साइबर क्राइम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। जिला पंचायत की पूर्व उपाध्यक्ष विभा पटेल ने बाल विवाह के बारे में तथा सहायक संचालक महिला बाल विकास विभाग आशीष द्विवेदी ने विभागीय योजनाओं एवं पीसीपीएनडीटी अधिनियम के बारे विस्तार से समझाया। बाल संरक्षण अधिकारी स्वाति श्रीवास्तव द्वारा महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न के बारे में जानकारी दी गई। परियोजना अधिकारी अंजना सिंह ने जेंडर समानता, अनीश पांडे ने घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 के बारे में विस्तार से समझाया। कार्यक्रम का संचालन राजराखन पटेल ने किया। कार्यक्रम में ग्राम पंचायत सरपंच सावित्री पाल एवं व आसपास के ग्रामो की महिलाएं, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, टीम अहिंसा के वोलेंटियर्स व युवा साथी उपस्थित रहे।

सुधार के 125 प्रकरण निराकृत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले की सभी तहसीलों में 15 नवम्बर से राजस्व महाभियान 3.0 चलाया जा रहा है। अभियान के तहत सभी राजस्व अधिकारी लंबित राजस्व प्रकरणों का निराकरण कर रहे हैं। पूर्व से दर्ज प्रकरणों के साथ अक्टूबर माह में दर्ज प्रकरणों का भी प्राथमिकता से निराकरण करके आरसीएमएस पोर्टल में दर्ज किया जा रहा है। राजस्व महाभियान में 28 नवम्बर तक अभिलेख में सुधार के 125 प्रकरण निराकृत किए गए। संबंधित एसडीएम ने प्रकरणों की सुनवाई करके इनका निराकरण किया। इस संबंध में प्रभारी कलेक्टर डॉ सौरभ सोनवड़े ने बताया कि एसडीएम गुढ़ ने 13, एसडीएम त्योंथर ने 10, एसडीएम मनगवां ने 5, एसडीएम रायपुर कर्चुलियान ने 10, एसडीएम हुजूर ने 31, एसडीएम हुजूर नगर तहसील ने 55 तथा कलेक्टर न्यायालय से एक प्रकरण का निराकरण किया गया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।